www.sanjanabharati.com

दिल्ली और गौतम बुद्ध नगर से प्रकाशित। हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड व उत्तराखंड में प्रसारित

facebook.com/Sanjanabharati

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

संजना भारती

RNI No. : DELHIN/2016/70240

आपका भरोसा, हमारी ताकत

2 रोजगार का अधिकार : उपयोगिता के बीस...

3 बिहार और वैशाली की प्रगति एवं समृद्धि में योगदान...

4 पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान को मिला नया...

वर्ष: 9 | अंक: 148 | दिल्ली, सोमवार, 24 मार्च 2025 | पृष्ठ संख्या: 4 | मूल्य: 1 रुपया

संक्षिप्त समाचार

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर 'भारी भीड़', 'कोई भगदड़ नहीं' : रेलवे अधिकारी

नई दिल्ली (एजेन्सी)। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर रविवार को विभिन्न ट्रेन के प्रस्थान में विलंब हो जाने से यात्रियों की भारी भीड़ जमा हो गई और इस बीच वहां अव्यवस्था की स्थिति उत्पन्न हो गयी। स्टेशन पर भगदड़ या भगदड़ जैसी स्थिति नहीं थी। रेलवे के अधिकारियों ने यह जानकारी दी। पुलिस के अनुसार, किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। हालांकि, कुछ ट्रेन के देरी से रवाना होने के कारण प्लेटफॉर्म नंबर 12 और 13 पर अतिरिक्त भीड़ जुट गयी थी। रेलवे बोर्ड के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि बेहतर प्रबंधन के लिए वरिष्ठ कमांडेंट रेलवे पुलिस बल (आरपीएफ) और नयी दिल्ली के स्टेशन निदेशक जैसे वरिष्ठ अधिकारी स्टेशन पर मौजूद हैं। रेलवे अधिकारी ने बताया कि भारी भीड़ थी लेकिन नयी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भगदड़ या भगदड़ जैसी कोई स्थिति नहीं थी। उन्होंने बताया कि अनारक्षित यात्रियों को होल्डिंग एरिया से ले जाने के प्रोटोकॉल का इस्तेमाल किया जा रहा है। पुलिस ने बताया कि अब कुछ ट्रेन रवाना हो चुकी हैं और स्थिति नियंत्रण में है।

जम्मू-कश्मीर के कठुआ में सुरक्षाबलों और आतंकवादियों के बीच मुठभेड़ जारी

जम्मू-कश्मीर (एजेन्सी)। जम्मू-कश्मीर के कठुआ जिले में अंतरराष्ट्रीय सीमा के पास घुसपैठ कर एक घने पौधशाला में छिपे आतंकवादियों को सुरक्षाबलों ने चारों ओर से रविवार को घेर लिया, जिसके बाद दोनों के बीच मुठभेड़ शुरू हो गई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि सुरक्षाबलों और आतंकवादियों के बीच शाम में आधे घंटे से अधिक समय तक भीषण गोलीबारी हुई। उन्होंने बताया कि सुरक्षाबलों और आतंकवादियों के बीच उस दौरान मुठभेड़ शुरू हो गई जब जम्मू-कश्मीर पुलिस के विशेष अभियान समूह ने इलाके में आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद सान्याल गांव के पौधशाला में शाम को तलाशी अभियान शुरू किया था। यह गांव अंतरराष्ट्रीय सीमा से करीब पांच किलोमीटर दूरी पर स्थित है। उन्होंने बताया कि छिपे हुए आतंकवादियों ने पुलिस दल पर भारी गोलीबारी की, जिसके बाद पुलिस ने जवाबी कार्रवाई की। उन्होंने बताया कि पुलिस, सेना और अर्धसैनिक बलों की अतिरिक्त टुकड़ियां क्षेत्र में तैनात कर दी गई हैं। अधिकारियों ने बताया कि पौधशाला के चारों ओर घेराबंदी मजबूत कर दी गई है और आतंकवादियों को ढेर करने के प्रयास जारी हैं। अधिकारियों के अनुसार, पौधशाला में लकड़ियां इकट्ठा करने गईं कुछ महिलाओं ने आतंकवादियों को देखा और उन्होंने बताया है कि उनकी (आतंकवादियों) संख्या पांच है।

मुख्यमंत्री फडणवीस ने नासिक के त्र्यंबकेश्वर मंदिर में पूजा-अर्चना की

महाराष्ट्र (एजेन्सी)। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने नासिक के त्र्यंबकेश्वर मंदिर में पूजा-अर्चना की और संत-महंतों से बातचीत की। जिला प्रशासन की ओर से जारी एक विज्ञप्ति में कहा गया कि मुख्यमंत्री ने सुबह भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंग मंदिरों में शामिल इस मंदिर में आरती की। आगामी सिंहस्थ कुंभ मेले के मद्देनजर उन्होंने वहां मौजूद संतों और महंतों से बातचीत की। फडणवीस के साथ राज्य आपदा प्रबंधन मंत्री गिरीश महाजन, विधायक सिमा हिरे, देवयानी फरांदे, डॉ. राहुल आहेर और हीरामण खोसकर, संभागीय आयुक्त डॉ. प्रवीण गेदम, जिलाधिकारी जलज शर्मा और अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। विज्ञप्ति में कहा गया कि मंदिर में दर्शन से पहले मुख्यमंत्री ने शहीद दिवस के अवसर पर स्वतंत्रता सेनानियों को पुष्पांजलि अर्पित की।

नक्सली हताश हो चुके हैं क्योंकि उनके खिलाफ अभियान तेज हो रहा है : हेमंत सोरेन

झारखंड (एजेन्सी)। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने रविवार को कहा कि राज्य में सुरक्षा बलों के अभियान तेज होने से नक्सली हताश हो गए हैं। सोरेन और राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने पश्चिमी सिंहभूम जिले में आईईडी विस्फोट में शहीद हो गये केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के एक जवान के पार्थिव शरीर पर पुष्पांजलि अर्पित की। यहां सीआरपीएफ की 133वीं बटालियन मुख्यालय में इन शहीद जवान को श्रद्धांजलि देने के लिए पुष्पांजलि समारोह आयोजित किया गया था। सोरेन ने पत्रकारो से कहा, सीआरपीएफ जवान का बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा। नक्सली हताश हो चुके हैं क्योंकि उनके खिलाफ अभियान तेज हो रहा है... यह अभियान जारी रहेगा। पुलिस के अनुसार, पश्चिमी सिंहभूम जिले में छोटानागरा थानाक्षेत्र के वानग्राम मरंगपोंगा जंगल में शनिवार को नक्सल विरोधी अभियान के दौरान आईईडी विस्फोट में सीआरपीएफ की 193 वीं बटालियन के उप-निरीक्षक सुनील कुमार मंडल और एक अन्य जवान पार्थ प्रतिम घायल हो गए थे। दोनों को इलाज के लिए हवाई मार्ग से रांची लाया गया जहां उपनिरीक्षक मंडल ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया।

शहीदी दिवस के अवसर पर दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने शहीद भगत सिंह पार्क, मालवीय नगर में शहीद-ए-आजम भगत सिंह जी की प्रतिमा का अनावरण किया। इस अवसर पर सांसद बांसुरी स्वराज, विधायक सतीश उपाध्याय सहित गणमान्य लोग उपस्थित रहे। (छाया: एसबी)

शहीदी दिवस के अवसर पर सीएम रेखा गुप्ता ने मालवीय नगर में शहीद-ए-आजम भगत सिंह की प्रतिमा का किया अनावरण

संजना भारती संवाददाता

नई दिल्ली। शहीदी दिवस के अवसर पर दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने शहीद भगत सिंह पार्क, मालवीय नगर में शहीद-ए-आजम भगत सिंह की प्रतिमा का अनावरण किया। इस अवसर पर सांसद बांसुरी स्वराज, विधायक सतीश उपाध्याय सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

इस कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि यह मेरे लिए गर्व और सम्मान का क्षण है कि हम शहीद भगत सिंह की नई प्रतिमा स्थापित कर रहे हैं। यह हमारे राष्ट्रीय नायकों के प्रति सच्चे सम्मान और समर्पण का प्रतीक है। हमारी सरकार देश के वीर सपूतों का पूरा सम्मान करती है और उनके बलिदानों को कभी नहीं भूल सकती।

इस अवसर पर सीएम रेखा गुप्ता ने कहा कि हमने पहले ही राष्ट्रीय ध्वज और देश के महानायकों की मूर्तियों के सम्मानजनक रखरखाव के लिए दिल्ली सरकार के सम्बंधित विभागों, अधिकारियो और संगठनों को निर्देश जारी किए हैं। हमारा राष्ट्रीय ध्वज और देश के महानायकों की मूर्तियाँ हमारे गौरवशाली इतिहास, संघर्ष और सांस्कृतिक विरासत की पहचान हैं।

इनका सम्मानजनक रखरखाव न केवल हमारा कर्तव्य है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए देशभक्ति और प्रेरणा का स्रोत भी है। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम इन प्रतीकों का आदर करें और उनके संरक्षण में योगदान दें। उन्होंने आगे कहा कि भगत सिंह जी का सपना था कि भारत एक ऐसा राष्ट्र बने जहां सभी को समान अधिकार मिलें।

सीएम रेखा गुप्ता और मंत्री कपिल मिश्रा ने बलिदान दिवस पर शहीदों को दी श्रद्धांजलि

दिल्ली सरकार ने बलिदान दिवस पर भव्य बाइक रैली का किया आयोजन

संजना भारती संवाददाता

नई दिल्ली। पूरे देश ने शहीद भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव के बलिदान दिवस पर उन्हें नमन किया। इस मौके पर दिल्ली सरकार ने बलिदान दिवस को श्रद्धा और सम्मान के साथ मनाया, जिसमें भारत के स्वतंत्रता संग्राम के वीर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और कला एवं संस्कृति मंत्री श्री कपिल मिश्रा सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने शहीद भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु के बलिदानों को नमन किया, जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया।

शहीद दिवस के अवसर पर, कला एवं संस्कृति मंत्री श्री कपिल मिश्रा ने आज राजीव चौक मेट्रो स्टेशन से एक भव्य बाइक रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने हिस्सा लिया... यह कार्यक्रम पंजाबी अकादमी द्वारा आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम में दिल्ली के कैबिनेट मंत्री, विधायक, गणमान्य व्यक्ति और नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित रहे और स्वतंत्रता सेनानियों को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। बड़ी संख्या में बाइक सवार जो पीली पगड़ी धारण किए हुये थे (जो शहीद भगत सिंह की प्रतीकात्मक पगड़ी मानी जाती है) वो देशभक्ति, आशा, खुशी और एक नए सवेरे की भावना का संदेश फैलाते हुए सड़कों पर निकले।

बाइक रैली कनॉट प्लेस के इनर सर्कल से शुरू होकर, बाराखंभा रोड, कोपरनिकस मार्ग, इंडिया गेट, शेरशाह रोड और मथुरा रोड होते हुए बहादुर शाह जफर मार्ग स्थित शहीदी पार्क पर संपन्न हुई। इसके बाद शहीदी पार्क में एक भव्य सांस्कृतिक संध्या आयोजित की गई, जिसमें स्वतंत्रता और बलिदान की भावना का उत्सव मनाया गया। इस आयोजन का मुख्य आकर्षण था देशभक्ति संगीतमय संध्या, जिसमें प्रसिद्ध पंजाबी गायक जसबीर जस्सी ने शानदार प्रस्तुति दी। वहीं कला एवं संस्कृति मंत्री कपिल मिश्रा ने कहा कि कला एवं संस्कृति विभाग ऐसे देशभक्त नायकों की जीवन चरित्र को जन जन तक पहुंचायेगा। देश के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीरों को याद रखना हमारा कर्तव्य है।

दिल्ली सरकार भगत सिंह के सपनों का भारत बनाने के लिए कृतसंकल्प है। इस मौके पर मंत्री ने मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता का धन्यवाद ज्ञापित किया।

संत निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन के तहत आयोजित किया गया रक्तदान शिविर

संजना भारती संवाददाता
प्रीतम कुमार

मोतिहारी। ज्ञान बाबू चौक स्थित भवानी मंडप में संत निरंकारी मिशन, मोतिहारी ब्रांच द्वारा, रविवार को स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ उप मेयर लालाबाबू प्रसाद एवं मिशन के स्थानीय मुखी महात्मा गणेश प्रसाद और संयोजक सह ज्ञान प्रचारक महात्मा जवाहर प्रसाद ने की। इस दौरान संयोजक महात्मा ने कहा कि जब इंसान समय के पूर्ण सतगुरु की शरण में आकर ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति करता है तो उसे अपने मूल व परम तत्व का एहसास हो जाता है। उन्होंने सतगुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज की वो बात याद दिलाई की 'रक्त नाड़ियों में बहे, नालियों में नहीं'।

सतगुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने यह भी कहा है कि रक्तदान करके हम कोई एहसान नहीं करते बल्कि यह तो मानव होने के नाते यह पहला मानवीय धर्म है। सन 1986 से अब तक निरंतर संत निरंकारी मिशन के श्रद्धालु भगत लगभग 14 लाख यूनिट रक्तदान कर चुके हैं। रक्तदान शिविर में लगभग 50 श्रद्धालुओं ने अपना रक्तदान किया। शहर के सदर हॉस्पिटल मोतिहारी के चिकित्सक पदाधिकारी डॉ. गंगाधर तिवारी, डॉ. नीरज कुमार, लैब टेक्नीशियन तबरेज अख्तर, कृष्ण कुमार, नवीन कुमार, अरविंद कुमार, एवं साथ में प्रभात कुमार, अमृता कुमारी, जयलाल साहनी, रामबाबू कुमार का भरपूर सहयोग रहा।

इस मौके पर सेवा दल अधिकारी ललन सोनी, बहन राखी, किरण देवी एवं मिशन के 500 से अधिक महात्मा एवं बहनें उपस्थित थे।

दिल्ली की हाउसिंग सोसायटीज में मिलेंगे स्वसहायता समूहों के उत्पाद: सहकारिता मंत्री रविन्द्र इन्द्राज सिंह

रजिस्ट्रार कोआपरेटिव सोसायटी कार्यालय में लगेगी शहीद भगत सिंह की भव्य प्रतिमा-मंत्री

संजना भारती/संजय कुमार

नई दिल्ली। समाज कल्याण, एससी/ एसटी कल्याण, चुनाव और सहकारिता मंत्री रविन्द्र इन्द्राज सिंह ने रविवार को अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 को लेकर आयोजित कार्यक्रम में रोहिणी सेक्टर-24 स्थित केशव उद्यान में दिव्यांग भाई-बहनों के साथ पौधारोपण कर उनका उत्साह बढ़ाया।

कार्यक्रम का आयोजन सहकार भारती, दिल्ली राज्य सहकारिता विभाग और युनाईटेड श्रिफ्ट एंड क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसायटीज फेडरेशन ऑफ दिल्ली लिमिटेड की ओर से किया गया।

सहकारिता मंत्री ने कार्यक्रम में आई संस्थाओं से विकसित दिल्ली के लिए कार्य करने का आग्रह किया और कहा की दिल्ली की हाउसिंग सोसायटीज में स्वसहायता समूह की बहनों द्वारा बनाए गए उत्पादों की बिक्री के लिए स्टोर खोले जाएँगे। जिससे दिल्ली की जरूरतमंद महिलाओं का आर्थिक स्वावलंबन होगा और इसके लिए दिल्ली के को-ऑपरेटिव बैंकों के द्वारा इन्हें आर्थिक मदद मिलेगी। इस अवसर पर सहकारिता मंत्री ने कहा की दिल्ली को प्रदूषण मुक्त करने एवं स्वच्छ पर्यावरण के कार्य में सहकारी संस्थाओं का विशेष योगदान हो सकता है। श्री रविन्द्र इंद्राज ने कहा की 'स्वच्छ दिल्ली-हरित दिल्ली' संकल्प को जनसहयोग से साकार करना है। इसलिए वृक्ष लगाएं और अन्य लोगों को लगाने के लिए भी प्रेरित करें। इसके बाद सहकारिता मंत्री ने शहीद दिवस के अवसर पर जय जवान फ्रेंड्स क्लब द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर में रक्तदान कर रहे लोगों का उत्साह बढ़ाया। कार्यक्रम के दौरान वीर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए श्री रविन्द्र इन्द्राज ने कहा की पूर्ववर्ती सरकार महान स्वतंत्रता सेनानी भगत सिंह जी की तस्वीरों को लेकर सिर्फ राजनीति करती थी, हमारी सरकार महापुरुषों से मिले राष्ट्रप्रेम के मूल्यों को ही अपना आदर्श मानती है। पूर्ववर्ती सरकार को जब दिल्ली की जनता ने नकार दिया तो उन्होंने हमारी सरकार पर शहीद भगत सिंह की तस्वीरें हटाने का आरोप लगाया।

श्री रविन्द्र इन्द्राज ने कहा की तस्वीरें कार्यालयों में अपनी जगह लगी हुई हैं, साथ ही संसद मार्ग स्थित रजिस्ट्रार कोआपरेटिव सोसायटी, दिल्ली कार्यालय के अपने पहले ही निरीक्षण में मैंने शहीद भगत सिंह की भव्य प्रतिमा लगाने के निर्देश दिये हैं।

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय पूरे विश्व में शांति, प्रेम, सद्भाव के संदेश का कर रही प्रचार-प्रसार: हरविंद्र कल्याण

एसबी विशेष संवाददाता/मदन पुरी

करनाल। हरियाणा विधानसभा के अध्यक्ष एवं घरौंडा के विधायक हरविंद्र कल्याण ने कहा कि धार्मिक संस्थाएं समाज को नई दिशा दिखाती हैं और इंसानियत का संदेश देते हैं। संस्थाएं लोगों को अच्छी शिक्षा, संस्कार और सही रास्ता दिखाकर उनके जीवन में बदलाव लाने का कार्य कर रही हैं।

इतना ही नहीं सामाजिक बुराइयों को दूर करने में भी अहम भूमिका निभाती हैं। इन संस्थाओं में से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी संस्था भी एक है। आज वास्तव में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय पूरे विश्व के अंदर शांति, प्रेम, सद्भाव बनाए रखने के संदेश का व्यापक स्तर पर पूरी दुनिया में प्रचार- प्रसार कर रही है। इस प्रकार से आज लाखों की संख्या में लोग चाहे वह मेडिटेशन की बात है चाहे वह अध्यात्म की तरफ चलने की बात है, यह जीवन में सत्यता क्या है, कैसा हमारा जीवन हो, कैसा हमारा कर्म हो, उस दिशा में वास्तव में एक अद्भुत कार्य कर रहा है। हरियाणा विधानसभा के अध्यक्ष हरविंद्र कल्याण आज स्थानीय हुड्डा ग्राउंड, सेक्टर 12 में ब्रह्मकुमारी की ओर से आयोजित राज्य स्तरीय विशाल महासम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। संस्था की ओर से अध्यक्ष का पुष्पगुच्छ देकर व पगड़ी पहनाकर स्वागत किया गया। इस मौके पर हरविंद्र कल्याण ने कहा कि आज के इस बहुत ही खूबसूरत कार्यक्रम में मुझे आकर वास्तव में बहुत अच्छा लगा है। जब प्रेम दीदी ने मुझे बताया पिछले महीने की पूरे भारतवर्ष में इन कार्यक्रमों का आयोजन हुआ है और आज हरियाणा के अंदर भी जो स्टेट लॉन्चिंग कार्यक्रम है यूनिवर्सल कल्चर, लव, पीस एंड हार्मनी-यह शब्द अपने आप में हमें जीवन की राह दिखाते हैं।

ब्रह्म कुमारी आश्रम की प्रभारी बीके निर्मल दीदी ने कहा कि आज ब्रह्माकुमारी की आर्ट एंड कल्चर विंग की ओर से स्टेट लॉन्चिंग कार्यक्रम आर्ट एंड कल्चर विंग का एक नया प्रोजेक्ट तैयार हुआ है यूनिवर्सल कलर लव पीस एंड हार्मनी-वैश्विक संस्कृति प्रेम शांति और सद्भावना। उन्होंने इस प्रोजेक्ट के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर हरियाणा विधानसभा के अध्यक्ष हरविंद्र कल्याण के शामिल होने पर उनका स्वागत एवं धन्यवाद किया। ब्रह्मकुमारी की ओर से आयोजित राज्यस्तरीय विशाल महासम्मेलन में गायक चांद बजाज, वैशाली डांस ग्रुप, प्रसिद्ध गायक व मिमिक आर्टिस्ट बीके नितिन ने अपनी प्रस्तुतियां दीं।

इस मौके पर करनाल के विधायक जगमोहन आनंद, करनाल की महापौर रेनू बाला गुप्ता, पूर्व मंत्री शशिपाल मेहता, निफा के चेयरमेन प्रीतपाल सिंह पन्नू, भाजपा के वरिष्ठ नेता बृज गुप्ता, राज योगिनी चंद्रिका दीदी, महाराष्ट्र से कुंदा दीदी, ब्रह्मकुमारी आश्रम की ओर से पूनम दीदी, नीति दीदी, सुनैना दीदी, सतीश, नितिन, माउंट आबू राजस्थान से दयाल सहित काफी संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित रहे।

किसानों की आमदनी बढ़े इसके लिए निरंतर प्रयासरत है सरकार: सीएम नायब सिंह सैनी

एसबी विशेष संवाददाता/मदन पुरी

करनाल। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा है कि हरियाणा सरकार किसानों की आय बढ़ाने के प्रति गंभीर है। किसानों के हित में अनेक योजनाएं शुरू की गई हैं। इस साल कृषि बजट में 19.2 प्रतिशत की वृद्धि की गई है। उन्होंने कहा कि कृषि क्षेत्र में काम करने वाले युवाओं को इजरायल भेजा जाएगा ताकि वे कृषि संबंधी नई तकनीकों से अवगत हो सकें। उन्होंने घरौंडा के इंडो-इजरायल सब्जी उत्कृष्टता केंद्र में हॉस्टल और सेमिनार हॉल बनवाने की घोषणा की और 74 प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया। मुख्यमंत्री ने शहीदी दिवस पर क्रांतिकारी वीर शहीद भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु की शहादत पर उन्हें नमन किया। साथ ही 'हरियाणा बागवानी' पत्रिका का विमोचन किया व किसानों द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

मुख्यमंत्री घरौंडा के इंडो-इजरायल सब्जी उत्कृष्टता केंद्र में आयोजित तीन दिवसीय 11वें मेगा सब्जी एक्सपो 2025 के समापन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि किसान हरियाणा की शान हैं। किसानों ने परंपरागत फसल चक्र से निकलकर फलों व सब्जियों की खेती तथा मधुमक्खी पालन में नवाचार व आधुनिक तकनीकों के माध्यम से उत्पादन बढ़ाकर एक मिसाल कायम की है। मेगा सब्जी एक्सपो-2025 हमारे किसानों के लिए कृषि तकनीकों की जानकारी प्राप्त करने का महत्वपूर्ण मंच है।

इस तीन दिवसीय एक्सपो में किसानों को बागवानी, सब्जी उत्पादन और मधुमक्खी पालन से जुड़ी नई तकनीकों, उन्नत किस्मों और आधुनिक कृषि यंत्रों की जानकारी मिलने के साथ-साथ कई समस्याओं का समाधान मिला है और नई संभावनाओं के बारे में भी पता चला है। बजट में खेती पशुपालन व बागवानी को दी है विशेष तरजीह मुख्यमंत्री नायब सिंह ने कहा कि प्रदेश सरकार किसान हितैषी है। किसानों के लिए कई कल्याणकारी योजनाएं चलाई गई है। किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए हरियाणा के बजट 2025-26 में कृषि के बजट में 19.2 प्रतिशत बढ़ोतरी की है। पशुधन के लिए बजट में 50.91 प्रतिशत, बागवानी में 95.5 प्रतिशत, मत्स्य का 144.4 प्रतिशत और सहकारिता का 58.8 प्रतिशत बढ़ाया है। प्रदेश सरकार ने पिछले साढ़े 10 वर्षों में किसानों को भावांतर भरपाई योजना के तहत 14500 रुपये दिए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सोच है कि किसान खुशहाल हो।

देसी गाय की खरीद के लिए अनुदान राशि 25 हजार से बढ़ाकर की 30 हजार रुपये। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने 2025-26 के बजट में देसी गाय की खरीद के लिए दी जाने वाली अनुदान राशि को 25 हजार रुपये से बढ़ाकर 30 हजार रुपये करने का प्रस्ताव किया है।

सम्पादकीय

किसानों की गिरफ्तारी

पंजाब सरकार ने लगभग 100 किसान नेताओं की गिरफ्तारी कर शंभू-खनौरी बॉर्डर खाली तो करा दिया है लेकिन अपनी मांगों को लेकर शांतिपूर्ण तरीके से आंदोलन कर रहे किसानों को गिरफ्तार करना न केवल केन्द्र सरकार को महंगा पड़ेगा बल्कि पंजाब की आम आदमी पार्टी सरकार के प्रति भी किसानों में नाराजगी बढ़ेगी। पंजाब सरकार का यह कदम इसलिये हैरत में डालता है क्योंकि जहां एक ओर आप का समर्थन शुरू से ही किसान आंदोलन को रहा है, तो वहीं कुछ माह पहले सुप्रीम कोर्ट में राज्य सरकार ने कहा था कि किसानों को हटाने या उनके खिलाफ कोई कार्रवाई करने से देश भर के किसानों में असंतोष फैलेगा जिससे स्थिति बेकाबू हो सकती है। इस कार्रवाई के बाद आंदोलन के और तेज होने का अनुमान है क्योंकि किसान नेताओं ने ऐलान किया है कि वे अंतिम सांस तक लड़ेंगे। अचानक हुई इस कार्रवाई से यह भी सवाल उठ रहा है कि क्या केन्द्र सरकार पंजाब सरकार के कंधे पर रखकर बन्दूक चला रही है? किसानों का एक प्रतिनिधि मंडल गुरुवार को चंडीगढ़ में केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान तथा केन्द्र सरकार के अधिकारियों से चर्चा कर लौट रहा था तभी उन्हें मोहाली में गिरफ्तार कर लिया गया। साथ ही पंजाब पुलिस के सैकड़ों जवानों द्वारा आंदोलन स्थल खाली कराने का एक्शन किया गया। इस कार्रवाई में जेसीबी और बुलडोजरों का इस्तेमाल हुआ। अनशनकारी व उनके समर्थन में बैठे किसानों के टेंट भी उखाड़ दिये गये। किसान मजदूर मोर्चा का कार्यालय, मंच और कच्चे-पक्के निर्माण ध्वस्त हो गये। पुलिस का दावा है कि सुबह तक पूरा क्षेत्र खाली हो जायेगा। समीपवर्ती इलाकों की इंटरनेट सेवाएं बन्द कर दी गयी हैं। लगभग 100 गिरफ्तार लोगों में सरवन सिंह पंढेर तथा जगजीत सिंग डल्लेवाल भी हैं जो आंदोलन के शीर्ष नेता हैं। पंजाब के वित्त मंत्री ने जले पर नमक छिड़कते हुए कहा है कि 'जिन राजमार्गों पर किसानों ने पिछले कई माह से आंदोलन जारी कर रखा है, वह नागरिकों के आवागमन में बाधा पहुंचा रहा है। ये राजमार्ग प्रदेश की जीवन रेखाएं हैं। किसानों द्वारा इन्हें अवरुद्ध करने के कारण उद्योग एवं व्यवसायों पर बुरा असर पड़ रहा है।' उनका यह भी कहना है कि 'इससे युवाओं को रोजगार नहीं मिल रहा है।' पिछले वर्ष 13 फरवरी को दिल्ली कूच करने निकले किसानों को जब रोका गया था तो उन्होंने शंभू-खनौरी बॉर्डर पर धरना दे दिया था। तब से यह आंदोलन वहां जारी था। एमएस स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों के अनुसार किसानों को उनके उत्पादों का न्यूनतम समर्थन मूल्य देने की मांग को लेकर देश भर के कई किसान संगठन आंदोलनरत हैं। उल्लेखनीय है कि 9 अगस्त, 2020 से 11 दिसम्बर, 2021 तक देश भर में किसानों का ऐतिहासिक आंदोलन केन्द्र के तीन कृषि कानूनों के खिलाफ हुआ था। इन कानूनों को वापस लेते हुए मोदी ने यह भी कहा था कि 'वे किसानों से केवल एक फोन कॉल की दूरी पर हैं।' वे इस मामले पर कभी भी चर्चा करने के लिये तैयार हैं।' कई माह ठहरने तथा अधिकारियों से कई राउंड की बातचीत के बाद भी सरकार द्वारा कोई फैसला न लेने के कारण किसानों को फिर से सड़कों पर उतरना पड़ा है।

जयंती

सत्येन्द्र प्रसन्नो सिन्हा

जन्म-24 मार्च, 1863, बीरभूम ज़िला, बंगाल; मृत्यु-4 मार्च, 1928, बहरामपुर) प्रसिद्ध भारतीय अधिवक्ता और राजनेता थे, जिनका कानूनी कार्यकाल बेहद सफल रहा था। वे बंगाल के महाधिवक्ता भी बनाये गए थे। वे ऐसे पहले भारतीय थे, जिन्होंने वाइसरॉय की काउंसिल में कानून सदस्य के रूप में प्रवेश करने का सम्मान प्राप्त किया था। सत्येन्द्र प्रसन्नो सिन्हा को प्रथम महायुद्ध के बाद 'लॉर्ड' की उपाधि दी गई थी। उनके पिता एक जमींदार थे। इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा अपने गृह नगर से ही प्राप्त की थी। इसके बाद 'प्रेसीडेंसी कॉलेज', कलकत्ता से छात्रवृत्ति प्राप्त की। उन्हें लंदन के 'लिंकंस इन' के बार से आमंत्रण भी प्राप्त हुआ था।

पुण्यतिथि

राधिकारमण प्रसाद सिंह

जन्म-10 सितम्बर, 1890, शाहाबाद, बिहार; मृत्यु-24 मार्च, 1971) का हिंदी के आधुनिक गद्यकारों में प्रमुख स्थान है। उन्होंने कहानी, गद्य, काव्य, उपन्यास, संस्मरण, नाटक सभी विद्याओं में साहित्य की रचना की। उनका संबंध देश के अनेक साहित्यिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक संस्थाओं से रहा। राधिकारमण प्रसाद सिंह की गणना हिंदी के यशस्वी-कथाकारों एवं विशिष्ट शैलीकारों में होती है। उन्होंने लगभग 50 वर्षों तक हिंदी की सेवा की। आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में आपका स्थान 'कानों में कंगना' के लिए स्मरणीय है। आरंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। जब वे 12 वर्षों के थे, तभी 1903 में उनके पूज्य पिताजी की मृत्यु हो गयी और उनका सारा स्टेट 'कोर्ट ऑॅव वाड्‌र्स' के अधीन हो गया। राधिकारमण प्रसाद सिंह ने क्रमशः 1907 में आरा ज़िला स्कूल से इन्ट्रेन्स, 1909-1910 में सेंट जेवियर्स कॉलेज, कलकत्ता से एफ.ए, 1912 में प्रयाग विश्वविद्यालय से बीए और 1914 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम.ए. (इतिहास) की परीक्षाएं पास कीं।

कल मिलेंगे

एक बार गोलू ने पूछा कि ये शादी कब होती है?
जवाब ये था कि जब आपका समय अनुकूल ना हो,
राहु-केतु और शनि की दशा खराब हो,
आपका मंगल कमजोर हो,
और भगवान ने भी आपके मजे लेने की ठान ली हो.
उस समय शादी हो जाती है.
अंत में गोलू ने सन्यास ही ले लिया.!

संजना भारती दैनिक

भगवान शंकर जी के 11वें रुद्रावतार हनुमान जी (मेंहदीपुर, श्री बाला जी) के संरक्षण में संचालित किया जाता है। समाचार पत्र का यह अंक भी उन्हीं के चरणों में श्रद्धापूर्वक समर्पित है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक-**संजय कुमार** द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-41, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित तथा ए-281सी, गली नं. 3, ए-ब्लॉक, अम्बिका विहार, शिव विहार, दिल्ली-110094 से प्रकाशित। इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत संपादक उत्तरदायी।
RNI No. : DELHIN/2016/70240
Phone No.: 9871221635
E-mail ID: sanjanabharati16@gmail.com
(किसी भी वाद-विवाद में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।)

रोजगार का अधिकार: उपयोगिता के बीस साल

नरेगा की कई विशेषताएं हैं और उन्हें अधिक प्रभावी बनाने के लिए इसमें सुधार किया जा सकता है। यह यूनिवर्सल बेसिक इनकम (यूबीआई) से अलग है जो बिना शर्त धन हस्तांतरण है। इसे 2017 के आर्थिक सर्वेक्षण में एक अवधारणा के रूप में पेश किया गया था। इसके विपरीत नरेगा स्व-चयनित व्यक्तियों के लिए है जिसमें कठिन शारीरिक श्रम की आवश्यकता होती है

-डॉ. अजीत रानाडे

बीस साल पहले संसद ने काम करने या रोजगार का अधिकार कानून पास किया था। यह एक ऐतिहासिक वैधानिक अधिकार है। संविधान के अनुच्छेद 41 में इस तरह के अधिकार की परिकल्पना की गई जो सभी राज्यों को सभी नागरिकों के लिए काम करने का अधिकार सुरक्षित करने का निर्देश देता है। इस कानून को महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) के रूप में जाना जाता है जिसे 23 अगस्त, 2005 को संसद ने अपनी मंजूरी दी थी। इसे 'नरेगा' भी कहते हैं। इस कानून ने काम मांगने वाले प्रत्येक ग्रामीण परिवार के एक सदस्य के लिए एक निर्दिष्ट दैनिक मजदूरी पर सौ दिनों के अकुशल मैनुअल काम का अधिकार दिया। इन सृजित नौकरियों में से एक तिहाई महिलाओं के लिए आरक्षित होनी थीं। आवेदक के निवास के 5 किलोमीटर के भीतर रोजगार दिया जाना है और अगर सरकार इस तरह के रोजगार का सृजन करने में असमर्थ है तो उसे मजदूरी के बदले कुछ भत्ता देना होगा। यह दुनिया का सबसे बड़ा सामाजिक सुरक्षा और लोक निर्माण कार्यक्रम है। शुरूआत में इस कार्यक्रम की सफलता पर संदेह होने के बावजूद अब विश्व बैंक द्वारा इसे विकास के एक मुख्य कार्यक्रम के रूप में वैश्विक सम्मान प्राप्त है।

मांग पर ग्रामीण नौकरियों का प्रावधान बेरोजगारी बीमा के लिए एक प्रॉक्सी है। विकसित देशों में बेरोजगार व्यक्ति रोजगार कार्यालय में जाकर अपना पंजीकरण कराता है और नौकरी की तलाश के दौरान बेरोजगारी भत्ता प्राप्त करता है। भारत में श्रम बाजार उतना व्यवस्थित नहीं है इसलिए ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है। इसके बजाय हमारे पास नरेगा है जो ग्रामीण आबादी को कवर करती है। सूखे और अकाल के दौरान नरेगा रोजगार की मांग बढ़ जाती है और यही कारण है कि यह वास्तव में एक 'बीमा' कार्यक्रम है। जब श्रम बाजार की स्थिति में सुधार होता है और कृषि श्रमिकों के लिए बहुत सारे काम उपलब्ध होते हैं तब नरेगा की मांग घटती है। यदि नरेगा की मांग गिरती है तो यह एक अच्छा संकेत है। यदि इस कार्यक्रम की उपयोगिता समाप्त हो जाती है तो इसका मतलब होगा कि ग्रामीण भारत पूर्ण रोजगार की स्थिति तक पहुंच गया है, लेकिन हम उस स्थिति से फिलहाल बहुत दूर हैं। हाल ही में महामारी के दौरान नरेगा के तहत काम की मांग में तेजी से वृद्धि हुई। वित्तीय वर्ष 2020-21 में नरेगा पर कुल व्यय बजट से दोगुना था जो लगभग 1.2 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया और 300 करोड़ व्यक्ति दिवस का काम पैदा हुआ।

नरेगा योजना आपदाओं के दौरान रोजगार प्रदान करता है। इसके तहत मिलने वाली मजदूरी, न्यूनतम मजदूरी से जुड़ी हुई है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि यह गरीबी-विरोधी उपाय के रूप में कार्य करे। योजना में महिलाओं की भागीदारी अधिक है जिसका उद्देश्य उन्हें राजनीतिक व आर्थिक रूप से सशक्त बनाना और स्वायत्तता देना है। कई कार्य स्थलों पर कामकाजी महिलाओं के लिए पालनाघर सेवाएं भी हैं ताकि छोटे बच्चों वाली महिलाएं बिना किसी चिंता के काम कर सकें। नरेगा के अंतर्गत सार्वजनिक कार्य, सिंचाई जलाशयों, तालाबों, नहरों, ग्रामीण सड़कों, वनीकरण आदि के काम शामिल किए गए हैं जो सार्वजनिक संपत्ति का निर्माण करते हैं। कुछ राज्यों में इस कार्यक्रम में ग्रामीण आवास या निजी संपत्ति का निर्माण भी शामिल है। ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार की उपलब्धता शहरों पर माईग्रेशन के तनाव को कम करती है। महामारी के दौरान गांवों में नरेगा के तहत काम प्रदान किया गया जिसके कारण बड़े पैमाने पर रिवर्स माइग्रेशन हुआ। श्रमिकों के अधिकार कानून में निहित हैं इसलिए लोगों के पास उन अधिकारों को हासिल करने का एक बेहतर मौका है। आधार लिंकेज की बदौलत मजदूरी का भुगतान सीधे बैंक खातों में जमा किया जाता है जिससे लीकेज कम होता है।

नरेगा के नकारात्मक पहलू क्या हैं? सर्वप्रथम, चूंकि यह एक श्रम बाजार हस्तक्षेप है जो मजदूरी का धरातल और वैकल्पिक विकल्प प्रदान करता है जिसकी वजह से जमींदार और मजदूरों की तलाश करने वाले लोग परेशान हैं। वे अक्सर श्रमिकों की कमी के बारे में शिकायत करते हैं या कहते हैं कि नरेगा श्रमिकों को 'आलसी' बना रहा है। नरेगा के तहत मिलने वाली मजदूरी न्यूनतम है इसलिए श्रमिकों को लुभाने के लिए वैकल्पिक कार्य के लिए मजदूरों को उच्च मजदूरी की पेशकश करने की आवश्यकता है।

दूसरा नकारात्मक पहलू यह है कि नियंत्रण और बायोमेट्रिक उपकरणों के बावजूद अभी भी निधियों का रिसाव है जिनमें श्रमिकों के नकली हाजिरी रजिस्टर जैसे तरीके शामिल हैं जो पैसे को बेईमानी से बाहर निकालने में मदद करते हैं। इसे रोकने के लिए ग्रामीणों या गैर सरकारी संगठनों के सामाजिक ऑडिट की आवश्यकता है। राजस्थान और आंध्र प्रदेश जैसे कुछ राज्यों में, जहां अच्छी सामाजिक लेखा परीक्षा है, लीकेज बहुत कम था।

तीसरी नकारात्मक समस्या बायोमेट्रिक आवश्यकताओं के कारण है। अंगूठे के निशान या रेटिना रीडर काम नहीं करते या बिजली या मशीन की विफलता के कारण श्रमिक को मजदूरी से वंचित कर दिया जाता है। यहां तक कि गलती की दर अगर 2 प्रतिशत है तो इसके परिणामस्वरूप 1 या 2 करोड़ श्रमिकों को योजना के लाभों से वंचित किया जा सकता है। यह एक गंभीर चूक है। बायोमेट्रिक काम नहीं करने की स्थिति में कुछ सुधारात्मक उपायों की आवश्यकता है।

चौथी कमी भुगतान में देरी की है। इस प्रवृत्ति में हाल में वृद्धि हुई है। ये दिहाड़ी मजदूर हैं इसलिए भुगतान में एक या दो सप्ताह से अधिक की देरी बहुत परेशान करने वाली हो सकती है। सरकारी सूत्रों के अनुसार, हाल के आंकड़ों से पता चलता है कि कुल 975 करोड़ रुपये के भुगतान में गंभीर विलंब हुआ है।

नरेगा की कई विशेषताएं हैं और उन्हें अधिक प्रभावी बनाने के लिए इसमें सुधार किया जा सकता है। यह यूनिवर्सल बेसिक इनकम (यूबीआई) से अलग है जो बिना शर्त धन हस्तांतरण है। इसे 2017 के आर्थिक सर्वेक्षण में एक अवधारणा के रूप में पेश किया गया था। इसके विपरीत नरेगा स्व-चयनित व्यक्तियों के लिए है जिसमें कठिन शारीरिक श्रम की आवश्यकता होती है। अगर सिस्टम ठीक से काम करता है तो यह संभवतः नकली और धोखाधड़ी के दावेदारों को फिल्टर करता है। एनआरईजीएस की सफलता का एक पैमाना यह है कि शहरी समकक्ष बेरोजगारों के लिए इस तरह की योजना शुरू करने की भी मांग होती है। कई राज्य सरकारों ने शहरी रोजगार गारंटी योजना भी शुरू करने पर विचार किया है। नरेगा लोक निर्माण कार्यक्रमों, प्रयोगों और पायलट परियोजनाओं की परिणति थी जो कुछ हद तक सफलता के साथ 1960 के दशक की शुरूआत में आरंभ हुई थी। लंबे सूखे की पृष्ठभूमि में 1973 में महाराष्ट्र की रोजगार गारंटी योजना शुरू की गई थी। राज्य सरकार ने शहरों में कार्यरत लोगों पर प्रोफेशनल टैक्स लगाकर इसके लिए धन इकट्ठा किया था। यह योजना अच्छे तरीके से चली और यह राष्ट्रीय कानून के लिए एक प्रेरणा थी। भारत में नरेगा जैसी योजना की आवश्यकता तब तक है जब तक कार्यरत श्रमिकों व बेरोजगार श्रमिकों के व्यापक पंजीकरण तथा ट्रैकिंग के साथ एक पूर्ण औपचारिक बेरोजगारी बीमा योजना शुरू नहीं होती एवं इसके लिए भुगतान करने के लिए नियोक्ताओं से पेरोल टैक्स एकत्र किया जाता रहेगा।

मुफ्त खाद्यान्न (5 किलो प्रति व्यक्ति प्रति माह) और विभिन्न प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण योजनाओं जैसे 'पीएम किसान' या 'लाडकी बहिण योजना' का अतिरिक्त प्रभाव इतना है कि नरेगा की आवश्यकता कुछ हद तक कम हो सकती है। यह नहीं भूलना चाहिए कि अपनी कार्य आवश्यकता के कारण नरेगा टिकाऊ ग्रामीण परिसंपत्तियों का सृजन करता है जो उत्पादकता और लोक कल्याण में भी वृद्धि करता है। यह महिला सशक्तिकरण के लिए एक अप्रत्यक्ष माध्यम के रूप में भी कार्य करता है। इसलिए नरेगा की उपलब्धियों एवं उसकी आवश्यकता के मद्देनजर उम्मीद है कि आने वाले वर्षों में यह और अधिक प्रभावी होगा। यह पूरी दुनिया के लिए रोल मॉडल है।

(लेखक जाने-माने अर्थशास्त्री हैं।
सिंडिकेट: द बिलियन प्रेस)

बीजों की रिश्तेदारी की अनूठी पहल

पातालकोट की यात्रा के दौरान हम सूखाभंड गांव से हम पैदल गैलडुब्बा पहुंचे थे। यहीं पर बीजों की रिश्तेदारी कार्यक्रम के तहत देसी बीजों की प्रदर्शनी, अनाजों के व्यंजन और सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन था। अलग-अलग गांवों से पैदल तो कुछ वाहनों से बड़ी संख्या में स्त्री-पुरुष पहुंचे थे। यहां पंडाल में देसी बीजों की प्रदर्शनी लगी थी। रंग-बिरंगे देसी बीज न केवल रंग-रूप में अलग थे बल्कि स्वाद में भी बेजोड़ थे

-बाबा मायाराम

मध्यप्रदेश के पातालकोट में भारिया आदिवासियों के बीच बीजों की रिश्तेदारी का अनूठा कार्यक्रम चल रहा है। इसके तहत जो परंपरागत बीज लुप्त हो चुके हैं, उन्हें खोजने, खेतों में बोने और उनके आदान-प्रदान का करने का काम किया जाता है। मैं इस इलाके में कई बार गया हूं और यहां के लोगों से मिला हूं और उनके बीज संग्रह को देखा है। आज इसी कहानी को बताना चाहूंगा जिससे यह जाना जा सके कि बिना पानी या कम पानी में किस तरह पौष्टिक अनाजों की खेती की जा सकती है।

आगे बढ़ने से पहले पातालकोट के बारे में जानना उचित होगा। छिंदवाड़ा से करीब 75 किलोमीटर दूर है पातालकोट। छिंदवाड़ा जिले की ही तामिया तहसील में है पातालकोट। पातालकोट का शाब्दिक अर्थ है पाताल यानी पाताल की तरह गहराई वाली जगह और कोट यानी दुर्ग। दीवारों से घिरा हुआ। यहां दीवार से अर्थ सतपुड़ा की ऊंची-ऊंची पहाड़ियों से है। यह आकार में कटोरे सा लगता है। सतपुड़ा की पर्वतमाला के बीच नीचे और बहुत गहराई में बसे हैं 12 गांव और उनके ढाने (मोहल्ले)। यहां के बारे में कहा जाता है कि जमीन से नीचे होने और सतपुड़ा की आड़ी-तिरछी पहाड़ियों के कारण यहां सूरज की रोशनी देर से पहुंचती है। भारिया आदिवासी ही यहां के मुख्य बाशिंदे हैं। कम संख्या में कुछ गोंड आदिवासी भी यहां हैं। यहां के 12 गांव हैं-कारेआम रातेड़, चिमटीपुर, पलानी गैलडुब्बा, घोंघरी गुज्जाडोंगरी,घटलिंगा, गुढ़ीछतरी, घाना कोड़िया, मालनी डोमनी, जड़मांदल हर्राकछार, सेहरा पचगोल, झिरन, सूखा भण्ड हारमऊ।

जब मैं यहां गया था तो सामाजिक कार्यकर्ता नरेश विश्वास मेरा इंतजार कर रहे थे। नरेश विश्वास, बीजों की रिश्तेदारी नामक कार्यक्रम के आयोजक थे और वे ही निर्माण संस्था के प्रमुख हैं। बैगा आदिवासी के बीच देसी बीजों पर लम्बे अरसे से काम करते हैं। पिछले साल वे मुझे सेवाग्राम में मिले थे, जहां उन्होंने आदिवासियों की खेती के बीजों की प्रदर्शनी लगाई थी। उन्होंने यह कार्यक्रम सिर्फ मध्यप्रदेश ही नहीं, छत्तीसगढ़ में भी चलाया जा रहा है। इसमें कोशिश की जाती है कि एक इलाके से दूसरे इलाकों में देसी बीज पहुंचे, उनका आदान-प्रदान हो और उसके साथ बीजों से जुड़ा पारंपरिक ज्ञान भी पहुंचे, जिससे देसी बीजों का प्रचार-प्रसार हो और इस खेती को बढ़ावा मिल सके।

पातालकोट की यात्रा के दौरान हम सूखाभंड गांव से हम पैदल गैलडुब्बा पहुंचे थे। यहीं पर बीजों की रिश्तेदारी कार्यक्रम के तहत देसी बीजों की प्रदर्शनी, अनाजों के व्यंजन और सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन था। अलग-अलग गांवों से पैदल तो कुछ वाहनों से बड़ी संख्या में स्त्री-पुरुष पहुंचे थे। यहां पंडाल में देसी बीजों की प्रदर्शनी लगी थी। रंग-बिरंगे देसी बीज न केवल रंग-रूप में अलग थे बल्कि स्वाद में भी बेजोड़ थे। बेउरी कुटकी, भदेल कुटकी, कंगना, कंगनी, मड़िया, बाजरा, कुसमुसी, बेड़ाबाल, तुअर, काला कांग, धान, सांवा, जगनी, मक्का, के बीज थे। बल्लर (सेमी), बरबटी, नेवा, लाल सेमा भी था। महुआ का भुरका था, जिसे जगनी और महुआ दोनों को कूटकर बनाया गया था। इसे लोगों ने बहुत पसंद किया। मैंने भी चखा। बेड़ा बाल की घुंघरी (उबालकर) बनाई जाती है। कुसमुसी की दाल व बड़े बनाए जाते हैं। कुटकी का भात और बल्लर की दाल प्रमुख भोजन है। कुटकी का पेज (एक तरह का सूप) बनाकर पीते हैं। मक्के की रोटी भी खाते हैं और भात (चावल की तरह) भी खाया जाता है। प्रदर्शनी में कई प्रकार के कांदा भी थे। बड़ा कांदा, माहली कांदा, सेत कांदा, डूनची कांदा, केऊ कांदा, कडु कांदा, मोड़ो कांदा, मूसल कंद, रातेड़ कांदा। इसके अलावा यहां कई प्रकार की जड़ी-बूटियां भी थीं। सफेद मूसली, सतावर, रामदातौन, गुडवेल, चिरायता, हर्रा, बहेड़ा, आंवला, अंतमूल (चाय की तरह पीते हैं), भिलवां इत्यादि। गैलडुब्बा के भगलू चालथिया ने बताया कि भारिया बरसों से आम की रोटी (आम की गोही को चूरा कर रोटी बनाई जाती है) और बल्लर की साग खाते थे। महुआ खाते थे। बांस की करील की सब्जी और दोवे भाजी की साग पकाते थे। कोयलार भाजी की हरी पत्तियों की सब्जी बनती है। वे आगे बताते हैं कि पहले हम दहिया खेती (शिफ्टिंग कल्टीवेशन) करते थे। खूब बेउर कुटकी पकती थी। मड़िया, कांग, कांगनी, जगनी, सिक्का और डंगरा बोते थे। अब दहिया पर रोक लगाई जा रही है। फिर हम कैसे जिएंगे? भगलू ने आगे बताया कि दहिया खेती का तरीका यह था कि बारिश के पहले ललताना व छोटी झाड़ियां काटकर उसमें आग लगा देते थे। चाहे उस जगह पर पत्थर ही क्यों न हों। जब झाड़िया जलकर राख हो जाती थीं, कांगनी फेंक देते थे। पानी गिरता था तो वह उग जाती थी। बाद में दो-तीन बार निंदाई-गुड़ाई करनी पड़ती थी और फसल पक जाती थी, बस। इस तरह खेती में एक-दो साल में जगह बदलनी पड़ती थी। इसमें हल चलाने की जरूरत नहीं पड़ती। इसलिए अंग्रेजी में इसे सिफ्टिंग कल्टीवेशन कहते हैं।

खेल/विदेश/कारोबार/फिल्म

नए प्रधानमंत्री मार्क कार्नी कनाडाई संसद में शामिल होने के लिए लड़ेंगे चुनाव

(एजेन्सी)।

कनाडा के नए प्रधानमंत्री मार्क कार्नी पहली बार संसद सदस्य बनने के लिए ओटावा क्षेत्र के एक जिले से चुनाव लड़ेंगे। लिबरल पार्टी ने शनिवार को यह घोषणा की। कार्नी देश में मध्यावधि आम चुनाव की संभवतः रविवार को घोषणा करेंगे जिसके लिए मतदान 28 अप्रैल को होने की संभावना है। यह चुनाव अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से पैदा किए गए संप्रभुता को खतरे और व्यापार युद्ध की आशंका की पृष्ठभूमि में होगा।

लिबरल पार्टी ने कहा कि कार्नी ओटावा के उपनगरीय क्षेत्र नेपियन का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुनाव लड़ेंगे। पार्टी ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा कि ओटावा वह जगह है जहां कार्नी ने अपने परिवार का पालन-पोषण किया और अपना करियर सार्वजनिक सेवा के लिए समर्पित किया। वह कनाडा के केंद्रीय बैंक के प्रमुख के रूप में सेवाएं दे चुके हैं। हाउस ऑफ कॉमन्स की 343 सीट या जिलों के लिए चुनाव प्रचार 37 दिन तक चलेगा।

पूर्व केंद्रीय बैंकर मार्क कार्नी ने 14 मार्च को कनाडा के नए प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली थी। कार्नी (59) ने प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो की जगह ली। ट्रूडो ने जनवरी में अपने इस्तीफे की घोषणा की थी। इस साल संभावित चुनाव में सत्तारूढ़ लिबरल पार्टी की हार की संभावना जताई जा रही थी, लेकिन ट्रंप ने शुल्क के रूप में आर्थिक युद्ध की घोषणा कर दी और पूरे देश को 51वें प्रांत के रूप में अमेरिका में मिलाने की चेतावनी दी। अब इन बदले समीकरण के कारण लिबरल पार्टी को चुनाव में बढ़त मिलने के दावे किए जा रहे हैं।

ट्रंप ने कनाडा के इस्पात और एल्युमीनियम पर 25 प्रतिशत शुल्क लगा दिया है तथा दो अप्रैल से सभी कनाडाई उत्पादों पर भारी शुल्क लगाने की घोषणा की है।

कार शो के दौरान गोलीबारी, तीन लोगों की मौत

(एजेन्सी)।

लास क्रूसेस। न्यू मेक्सिको के लास क्रूसेस शहर में एक पार्क में गोलीबारी की घटना में तीन लोगों की मौत हो गई और 15 अन्य लोग घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस और अग्निशमन दल घटना के बाद शुक्रवार रात करीब 10 बजे शहर के यंग पार्क में पहुंचे। पार्क में कार शो आयोजित किया गया था और उसमें लगभग 200 लोग इकट्ठा हुए थे। पुलिस ने बताया कि इस कार शो के लिए अनुमति नहीं ली गई थी। उसने बताया कि पीड़ितों का पहले घटनास्थल पर ही इलाज किया गया और फिर उन्हें उपचार के लिए अस्पतालों में भेजा गया। लास क्रूसेस पुलिस प्रमुख जेरेमी स्टोरी ने बताया कि पार्क के एक बड़े हिस्से में 50 से 60 खोखे बिखरे हुए मिले हैं, जिससे प्रतीत होता है कि कई लोगों ने कई अग्नेयास्त्रों से गोलीबारी की। पुलिस को संदेह है कि ये दो गुटों के बीच गोलीबारी की घटना है जिसमें तीन लोग मारे गए और 15 लोग घायल हो गए। मृतकों में 19 साल के दो युवक और 16 साल का एक किशोर शामिल है। पुलिस ने मृतकों और घायलों के नाम फिलहाल उजागर नहीं किए हैं। शहर के इस पार्क में हालांकि अवैध कार शो होना कोई नयी बात नहीं है लेकिन पहले क्षेत्र में पुलिस की मौजूदगी अधिक रहती थी।

लास क्रूसेस के दमकल विभाग के प्रमुख माइकल डेनियल ने बताया कि घायलों को तीन स्थानीय अस्पतालों और एल पासो के यूनिवर्सिटी मेडिकल सेंटर में भर्ती कराया गया।

लास क्रूसेस सिटी काउंसलर जोहाना बेनकोमो ने शनिवार को इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट में इस घटना पर दुख व्यक्त किया।

सनराइजर्स हैदराबाद ने राजस्थान रॉयल्स को हराया

(एजेन्सी)।

आईपीएल 2025 का दूसरा मैच सनराइजर्स हैदराबाद और राजस्थान रॉयल्स के बीच खेला जा रहा। दोनों टीम हैदराबाद के राजीव गांधी स्टेडियम में आमने-सामने हैं। राजस्थान ने टॉस जीतकर पहले बॉलिंग चुनी जिसके बाद उसके गेंदबाज इस फैसले को सही साबित नहीं कर पाए। हैदराबाद ने ताबड़तोड़ अंदाज में बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 286 रनों का पहाड़ जैसा लक्ष्य रखा है। हैदराबाद की तरफ से ईशान किशन ने बेहतरीन शतक बनाया है।

हैदराबाद ने पहले बल्लेबाजी करते हुए आईपीएल इतिहास का दूसरा सबसे बड़ा स्कोर बना दिया है। राजस्थान रॉयल्स ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। रियान का ये फैसला गलता साबित हुआ। अभिषेक शर्मा और ट्रेविस हेड ने तेज शुरूआत की। पहले 3.1 ओवर में 45 रन जोड़े। अभिषेक 24 रन बनाकर आउट हुए। इसके बाद हेड 67 रन बनाकर आउट हुए। हालांकि, ईशान किशन ने राजस्थान के गेंदबाजों की खूब खबर ली।

किशन ने 45 गेंद पर अपना पहला आईपीएल शतक पूरा किया। क्लासेन ने 14 गेंद पर 34 रन और नीतीश रेड्डी ने 15 गेंद पर 30 रन की तेजी पारी खेली। तुषार देशपांडे ने सर्वाधिक तीन विकेट लिए। जोफ्रा आर्चर ने 4 ओवर में 76 रन दिए। लक्ष्य का पीछा करते हुए राजस्थान रॉयल्स ने 242 रन बनाए। संजू सैमसन ने 66 रन और ध्रुव जुरेल ने 70 रन की तेज पारी खेली। शिमरन हेटमायर ने 23 गेंद पर 40 रन बनाए। शुभम दुबे ने नाबाद 34 रन का योगदान दिया। इसके बावजूद राजस्थान रॉयल्स पीछे रह गए।

विराट कोहली को गले लगाने वाला फैन हुआ गिरफ्तार

(एजेन्सी)।

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के लिए आईपीएल 2025 की शुरूआत शानदार हुई है। पहले मैच में आरसीबी ने केकेआर को 7 विकेट से हराया। विराट कोहली ने इस मैच में 59 रनों की नाबाद पारी खेली। उनके अर्धशतक के बाद एक फैन ईडन गार्डन्स ग्राउंड पर घुस आया था, जो कोहली के पास पहुंच गया। फैन पहले कोहली के पैरों में गिर गया और फिर उन्हें गले लगा लिया। सुरक्षाकर्मी आए और उसे पकड़कर मैदान से बाहर कर दिया। वहीं पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया है। बता दें कि, रिपोर्ट्‌स के अनुसार फैन पर भारतीय न्याय संहिता की धारा 329 के तहत मामला दर्ज हुआ है। ये धारा तब लागू होती है जब कोई व्यक्ति बिना किसी वैध अनुमति या अधिकार के किसी संपत्ति में प्रवेश करता है।

सोशल मीडिया पर विराट कोहली के इस पैन की कई वीडियो वायरल हो रही है। एक वीडियो से साफ हो रहा है कि कैसे वह एक जाली लगी हुई ग्रिल को फांदकर ग्राउंड के अंदर जा रहा है। विराट कोहली को लेकर ऐसी दिवानगी अक्सर देखी जाती है। इससे पहले भी कई विराट के फैंस ग्राउंड पर घुस आए हैं। इस मैच में रजत पाटीदार ने टॉस जीतकर केकेआर को बल्लेबाजी का निमंत्रण दिया था। अजिंक्य रहाणे और सुनील नारायण की 103 रनों की साझेदारी से केकेआर की शुरूआत अच्छी हुई थी। क्रुणाल पंड्या ने शानदार स्पेल डालकर आरसीबी की वापसी कराई थी और केकेआर को 174 पर रोक दिया था। क्रुणाल पंड्या ने अपने 4 ओवरों के स्पेल में 29 रन देकर 3 विकेट चटकाए थे।

175 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए आरसीबी ने 17वें ओवर में जीत हासिल की थी। फिल साल्ट और विराट कोहली ने पहले विकेट के लिए 95 रन बनाकर लक्ष्य को आसान बना दिया था। साल्ट ने 31 गेंदों में 56 रन बनाए थे। विराट कोहली ने 36 गेंदों में नाबाद 59 रन बनाए, इसमें उन्होंने 3 छक्के और 4 चौके जड़े।

किसी भी इमरजेंसी के लिए कैसे बनाएं फंड

(एजेन्सी)।

नई दिल्ली। कोई भी इमरजेंसी बताकर नहीं आती। हमें भविष्य में किसी भी तरह की इमरजेंसी का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे में हमें इमरजेंसी जैसी स्थिति के लिए पूरी तरह से तैयार होना पड़ेगा। इमरजेंसी में पैसों की कमी ना हो इसके लिए हमें एक मोटा फंड तैयार करना होगा। इमरजेंसी फंड बनाने के लिए आपका सेविंग करना बेहद जरूरी है। अगर आप इमरजेंसी फंड तैयार करना चाहते हैं, तो नीचे बताए गए तरीको को जरूर अपनाएं।

सबसे पहले आपको हर महीने मिलने वाली इनकम और खर्च का एक बजट तैयार करना होगा। इसके जरिए पता लगाया जा सकता है कि आप कितना पैसा बचा पाएंगे। इसी बचत से आपको एक फंड इमरजेंसी के लिए भी रखना होगा। आप इन पैसों को कहीं निवेश भी कर सकते हैं। हालांकि इस बात का ध्यान दें कि निवेश प्लेटफॉर्म ऐसा हो, जहां से आप बिना किसी परेशानी के पैसा निकाल सकें। इमरजेंसी के लिए तय कई रकम आपकी सैलरी पर निर्भर करती है। इसके साथ ही इस बात पर भी कि सैलरी से कितना पैसा बचता है। ऐसा कहा जाता है कि व्यक्ति को 3 से 6 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड रखना चाहिए।

उदाहरण के लिए अगर आप हर महीने 30 हजार रुपये खर्च करते हैं, तो आपको कम से कम 90 हजार रुपये इमरजेंसी के लिए रखने चाहिए। ऐसे ही अगर सैलरी 50 हजार रुपये है और 20 हजार रुपये खर्च हो जाते हैं। तो कम से कम इमरजेंसी के लिए 60 हजार रुपये जरूर रखें। भविष्य कभी भी हमें किसी भी तरह की इमरजेंसी का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे समय के लिए हमेशा तैयार रहना जरूरी है। इमरजेंसी फंड हमें भविष्य में होने वाली किसी भी आर्थिक समस्या से निपटने के लिए सक्षम बनाता है। आप छोटी रकम से भी इमरजेंसी फंड तैयार कर सकते हैं। ये फंड आपकी सैलरी पर निर्भर करता है। लेकिन हमेशा ही अपनी सैलरी का कुछ हिस्सा इमरजेंसी के समय के लिए जरूर रखें।

भारत में करोड़ों लोग मेरे जैसे दिखते हैं...नवाजुद्दीन सिद्दीकी

(एजेन्सी)। अभिनेता नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने हाल ही एक इंटरव्यू में बताया कि उन्हें भीड़ में घुलने-मिलने में मजा आता है, हालांकि इससे कई बार मजेदार परिस्थितियां पैदा हो जाती हैं, जैसे कि उन्हें अपनी फिल्मों के सेट पर जाने से रोक दिया जाता था। एक्टर ने याद किया कि अपने करियर के शुरूआती सालों में, जब वे ऑडिशन के लिए लोगों से संपर्क करते थे, तो वे उनसे कहते थे कि वे अभिनेता जैसे नहीं दिखते। नवाजुद्दीन ने कहा कि वे निराश हो जाते थे। न्यूज 18 की एक खबर के मुताबिक, नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने एक इंटरव्यू के दौरान बताया कि उन्हें अक्सर अपनी ही फिल्म के सेट पर रोक दिया जाता था। उन्हें भीड़ में घुलने-मिलने में मजा आता है। शुरूआती दिनों में जब वे ऑडिशन के लिए जाते थे, तो लोग कहते थे कि वे अभिनेता जैसे नहीं दिखते। इससे उन्हें गुस्सा और दुख होता था। वे कहते हैं कि लोग उनसे पूछते थे, आप कौन हैं? और जब वे बताते कि वे अभिनेता हैं, तो लोग कहते, "आप तो अभिनेता जैसे दिखते नहीं।

आगे इंटरव्यू में नवाजुद्दीन ने कहा, "आप अपरंपरागत दिखते हैं"। भाई, मैं अपरंपरागत कैसे हो सकता हूं, जब भारत में करोड़ों लोग मेरे जैसे दिखते हैं। मैं पारंपरिक हूं, यह ऋतिक रोशन हैं जो अपरंपरागत दिखते हैं।" नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने तलाश के सेट से एक किस्सा शेयर किया, जिसमें एक सुरक्षा गार्ड ने उन्हें सेट में घुसने से रोक दिया था। उन्हें गार्ड को यह समझाने के बाद ही अंदर जाने दिया गया कि वह फिल्म में एक अभिनेता हैं। एक्टर ने यह भी कहा कि उनके साथ आज भी ऐसा होता है। रात अकेली है पार्ट 2 की शूटिंग को याद करते हुए नवाजुद्दीन ने कहा, "मेरे साथ आज भी ऐसा होता है... मैं अभी हनी त्रेहान सर के साथ 'रात अकेली है पार्ट 2' की शूटिंग कर रहा हूं। मैं उनके पीछे खड़ा होता और वह मुझे ढूंढ़ते। मैं तब कहता, 'सर, मैं आपके ठीक पीछे हूं'। यह अच्छा है। मुझे पता है कि भीड़ में कैसे घुलना-मिलना है और मुझे यह पसंद है। मेरा व्यक्तित्व ऐसा ही है और मैं इसका फायदा उठाता हूं।" पहले एक इंटरव्यू में नवाजुद्दीन ने रंग और शक्ल को लेकर लोगों के बुरे बर्ताव के बारे में भी बात की थी। नवाजुद्दीन ने कहा कि लोग उन्हें हमेशा कहते हैं कि वे बदसूरत हैं। दुख की बात यह है कि अब वे भी इस पर यकीन करने लगे हैं। वे कहते हैं, "कुछ लोग मेरी शक्ल से नफरत क्यों करते हैं, पता नहीं। शायद इसलिए कि मैं इतना बुरा दिखता हूं। मैं खुद को आईने में देखता हूं तो सोचता हूं कि इतनी खराब शक्ल लेकर फिल्म इंडस्ट्री में क्यों आया?"

बिहार और वैशाली की प्रगति एवं समृद्धि में योगदान का प्रण लें: जिलाधिकारी

■ जिला में उत्सव स्वरूप में मनाया गया बिहार दिवस

एसबी ब्यूरो प्रमुख/डॉ. संजय

हाजीपुर। वैशाली के जिलाधिकारी, यशपाल मीणा ने बिहार दिवस के अवसर पर जिलावासियों से अपील करते हुए कहा कि बिहार और प्रथम गणतंत्र की धरती वैशाली की प्रगति और समृद्धि में अपना योगदान भी सुनिश्चित करें। विकास के लिए सम्मिलित प्रयास जरूरी है। जिला पदाधिकारी बिहार दिवस के अवसर पर स्थानीय जी.ए. इंटर स्कूल में आयोजित समारोह का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन के बाद मौजूद लोगों को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर जिला के कई वरीय पदाधिकारी और सैकड़ों की संख्या में स्कूल-कॉलेज के छात्र-छात्राएं और आमजन मौजूद रहे।

कार्यक्रम के उद्घाटन के बाद शिक्षा विभाग के संगीत शिक्षकों द्वारा बिहार राज्य गीत की प्रस्तुति हुई। इसके उपरांत स्कूली बच्चों द्वारा एक से बढ़कर एक कार्यक्रम पेश किया गया। बिहार दिवस 2025 का थीम है 'उन्नत बिहार विकसित बिहार'। जिलाधिकारी द्वारा इस अवसर पर मिशन शक्ति योजना अंतर्गत वन स्टॉप सेंटर में चयनित तीन अभ्यर्थियों यथा लवली कुमारी, आभा रानी और सोनू कुमार को नियुक्ति-पत्र सौंपा गया। इसके पहले सुबह में स्कूली बच्चों द्वारा प्रभातफेरी निकाली गई जो समाहरणालय परिसर से चलकर जी.ए. इंटर स्कूल तक पहुंचा। बैंड बजाते और जय बिहार के जयकारे लगाते बच्चे माहौल को उत्सवी बना रहे थे। प्रभातफेरी में जिलाधिकारी के साथ-साथ सभी वरीय पदाधिकारी भी मौजूद रहे। शाम में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इसमें सृष्टि फाऊंडेशन ने मनमोहक शिव स्तुति प्रस्तुत की।

उच्च विद्यालय, सेन्दुआरी के बच्चों ने स्वागत गान पेश किया। आद्या, मानस राज और वैष्णव राज ने शास्त्री गायन की प्रभावी प्रस्तुति दी। प्रोजेक्ट बालिका हाई स्कूल के छात्रों ने सूफी गायन पेश किया। अतहर इमाम ने मुख से कई ध्वनियां निकाल कर दर्शकों का मनोरंजन किया। जिला योजना पदाधिकारी, नीरज ने एक पुराना गीत "ये समा, समा है ये प्यार का" को पेशकर माहौल बनाया। इसके अतिरिक्त संगीत शिक्षक और छात्रों तथा स्थानीय कलाकार जाह्नवी दुर्गा द्वारा लोकगीत पेश किया गया।

इस अवसर पर समूह नृत्य, गीत, कजरी, एकल नृत्य प्रस्तुत आदि की शानदार प्रस्तुति हुई। इस क्रम में दूसरे दिन भी जारी रहा सांस्कृतिक कार्यक्रम जिसका आनंद उठाये दर्शक। मंच का संचालन कौशर प्रवेज खान ने किया।

इस अवसर पर अपर समाहर्ता, विनोद कुमार सिंह, उप विकास आयुक्त, कुंदन कुमार, जिला शिक्षा पदाधिकारी, बीरेंद्र नारायण, जिला कला संस्कृति पदाधिकारी, शालिनी शर्मा सहित कई वरीय पदाधिकारी मौजूद रहे।

नगर कांग्रेस कमेटी के द्वारा मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का पुतला दहन

एसबी ब्यूरो

बेगूसराय नगर। शहर के मुख्य द्वार ट्रैफिक चौक पर राष्ट्रगान के अपमान बेलगाम अपराध पलायन बेरोजगारी सहित विभिन्न मुद्दों को लेकर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का किया गया पुतला दहन नगर कांग्रेस कमेटी बेगूसराय के द्वारा। पुतला दहन कार्यक्रम की अध्यक्षता नगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पूर्व पार्षद ब्रजेश कुमार प्रिंस ने की। जेके स्कूल के पास से जुलूस की शक्ल में कांग्रेस जन नारा लगाते हुए ट्रैफिक चौक पहुंचे जहां पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का पुतला दहन किया गया।

पुतला दहन कार्यक्रम के मौके पर जिला कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष रामविलास सिंह, जिला महासचिव कुमार गौरव राजू, सुनील कुमार सिंह, रामानुज कुमार, संजय सम्राट अधिवक्ता, मोहित कुमार सिंह, दीपक कश्यप, सार्थक डोडो, प्रभाकर कुमार, मो. सलीम, ललन कुमार, मो. कलीम, पिंटू झा, सागर कुमार, दिनेश झा सहित अन्य कांग्रेस जन उपस्थित थे।

विधानसभा कोरांव व मेजा के कार्यकर्ताओं ने नवनिर्वाचित जिलाध्यक्ष का किया स्वागत अभिनंदन

■ मुझे काफिला नही कार्यकर्ता चाहिए-राजेश शुक्ला नवनिर्वाचित जिलाध्यक्ष

एसबी संवाददाता/मनोज कुमार बिन्द

प्रयागराज। भारतीय जनता पार्टी के नवनिर्वाचित जिलाध्यक्ष राजेश शुक्ला का रविवार को लक्ष्मी गार्डेन कोरांव व मेजा विधानसभा के शिवगंगा वाटिका सिरसा के कार्यकर्ताओं द्वारा स्वागत अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया।

जिलाध्यक्ष राजेश शुक्ला ने कहा कि कार्यकर्ताओं के स्वाभिमान सम्मान की रक्षा करना मेरा कर्तव्य है मै बूथ का जमीनी कार्यकर्ता हू, कार्यकर्ताओं के सम्मान के लिए जान की बाजी लगानी पड़ेगी तो पीछे नहीं हटूंगा। कंधा से कंधा मिलाकर पैदल मोटरसाइकिल से चलूंगा, मुझे काफिला नहीं कार्यकर्ता चाहिये, इसके लिए आपको मेहनत करनी पड़ेगी होगा, आने वाले पंचायत चुनाव व चारों विधानसभाओं में कमल का परचम लहराकर शीर्ष नेतृत्व के मंशा पर खरा उतरना होंगा, इसलिए आपका आपका सम्मान भी करेंगे। आपसे काम भी लूंगा तभी मोदी -योगी के हाथ और मजबूत होंगे। विधायक कोरांव राजमणि कोल ने कहा भाजपा के सभी कार्यकर्ता मेहनत करके काम करते हुए चारों तरफ कमल खिलाए यहीं सबसे बड़ा सम्मान और स्वागत होगा। लोकसभा इलाहाबाद के पूर्व प्रत्याशी नीरज त्रिपाठी ने कहा की नवनिर्वाचित जिलाध्यक्ष के साथ निर्वाचित मंडल अध्यक्षों का स्वागत करनें का अवसर मिला जिलाध्यक्ष राजेश शुक्ल विषम परिस्थितियों मे हथियार डालने वाले नहीं हैं, केवल आप कार्यकर्ताओं का साथ चाहिए। पूर्व जिलाध्यक्ष शिवदत्त पटेल ने कहा चार पीढ़ियों के कार्यकर्ता आपको आशीर्वाद दे रहे यह बड़ा सौभाग्य है।

नगर पंचायत कोरांव चेयरमैन ओमकार केसरी, नगर पंचायत सिरसा चेयरमैन विपिन केशरी लखन, ब्लाक प्रमुख कोरांव मुकेश कोल, मंडल अध्यक्ष करूणेन्द्र श्रीवास्तव, राजेश कुमार द्विवेदी, रामराज सिंह पटेल, सूर्य प्रताप सिंह पटेल, जिला उपाध्यक्ष अजीत प्रताप सिंह, जिला उपाध्यक्ष राजेश्वरी प्रसाद तिवारी, जिला उपाध्यक्ष अशोक कुमार पाण्डेय, जिला महामंत्री पुष्पराज सिंह पटेल, जिला मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुर्वेदी, प्रोटोकॉल मंत्री सुरेश शुक्ला आदि ने बड़ी माला पहनाकर पहनाकर अंगवस्त्रम के साथ स्वागत अभिनन्दन किया। संचालन मंडल अध्यक्ष कोरांव हरिकृष्ण द्विवेदी बबुआन ने किया। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुर्वेदी ने बताया कि मेजा विधानसभा के सिरसा में रोड़शो के माध्यम से नगरवासियों के स्वागत स्वीकार करते हुए शीर्ष नेतृत्व सहित कार्यकर्ताओं व जनता-जनार्दन का जिलाध्यक्ष ने आभार व्यक्त किया। मेजा-कोरांव विधानसभा के साथ यमुनापार के भारी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहें। जिसमें प्रमुख रूप अनूसूचित मोर्चा जिलाध्यक्ष राजमणि पासवान, सुधाकर पांडेय, सुरेश शुक्ला राजेश धनगढ, नाथू गुप्ता, नित्यानंद उपाध्याय,तुलसी दास राणा, राजू शुक्ला, अरूण सिंह, शुशील केसरी, हरिप्रसाद, ज्ञाननारायण कन्नौजिया, संतरा निषाद, अनिल मिश्रा, आनन्द तिवारी, मिथिलेश पांडेय, प्रवीण मिश्रा, राकेश विश्वकर्मा, विजय तिवारी, डां. देवी सिंह आदि के साथ भारी संख्या में कोरांव और मेजा के पूर्व पदाधिकारी कार्यकर्ता उपस्थित रहें।

बिहार दिवस के अवसर पर सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने नागरिकों का मोहा मन

एसबी ब्यूरो प्रमुख/मृगांक शेखर सिंह

जमुई। कलाकार बहुमुखी प्रतिभा के धनी होते हैं और हर फनकारों की प्रतिभा अलग होती है। इसलिए नागरिकों को चाहिए कि कलाकारों की मौलिक प्रतिभा को पहचान कर उसे कला क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करें ताकि वे शिखर पर विराजमान हो सकें। मनोहारी कार्यक्रम देखने के बाद यह सिद्ध हो जाता है कला हमेशा की तरह आज भी जीवित है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जमुई के डीडीसी सुभाष चंद्र मंडल ने यह बात श्रीकृष्ण सिंह स्टेडियम के मैदान पर बिहार दिवस के अवसर पर आयोजित संस्कृतिक संध्या कार्यक्रम का शुभारंभ करने के बाद मौजूद जन समुद्र को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कलाकारों की प्रतिभा को देखकर मंत्र मुग्ध होते हुए आगे कहा कि आप सबों ने बिहार दिवस को यादगार बना दिया। डीडीसी ने कलाकारों की जमकर तारीफ करते हुए उनके स्वर्णिम भविष्य की कामना की। अपर समाहर्ता सह जिला लोक शिकायत निवारण पदाधिकारी राम दुलार राम, डीपीआरओ वीरेंद्र कुमार, डीसीएलआर मो. तारिक रजा, नजारत उप समाहर्ता अमु आमला, वरीय उप समाहर्ता नागमणि कुमार वर्मा, शशांक बरनवाल, डीईओ राजेश कुमार समेत दर्जनों शिक्षाविदों ने सांस्कृतिक संध्या में शिरकत किया और कलाकारों का मनोबल बढ़ाया।

उद्घाटन सत्र के बाद म्यूजिशियन टीम मनोहरी वेशभूषा में मंचासीन हुआ और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर उपस्थित जन समूह का मन मोह लिया। राज्य उद्घोषक डॉ. निरंजन कुमार ने कार्यक्रम का संचालन कर खूब तालियां बटोरी। उन्होंने संचालन के दरम्यान शेरो-शायरी का बौछार कर दिया।

सांस्कृतिक संध्या का आरंभ नामचीन कलाकार आलोक चौबे के द्वारा गाए गए श्रीगणेशा.... भजन से हुआ। इसके बाद उन्होंने गीतों की झड़ी लगा दी। कई रोचक गीत की प्रस्तुति के बाद शिरडी वाले साईं बाबा.... नामक गीत से अपने गायन को विराम दिया। इसके बाद संगीत की दुनिया की सशक्त हस्ताक्षर श्यामा शैलजा झा ने मंच संभाला और मैथिली गीत के साथ कई मनोरंजक गीत गाए और कजरा मोहब्बत वाला ....से श्रोताओं का दिल जीता।

कार्यक्रम के अंत में शिखा कुमारी नामक कलाकार ने अपनी उपस्थिति दर्ज की और लोगों का स्थानीय लोक गीत , झूमर आदि से भरपूर मनोरंजन किया। सांस्कृतिक संध्या में नागरिकों का जोश देखते ही बनता था। कलाकारों ने कार्यक्रम के दरम्यान एक से बढ़कर एक गीत प्रस्तुत करके समां बांध दिया। मनोरंजक कार्यक्रम में श्रोता टस से मस नहीं हुए।

अपर समाहर्ता सह जिला लोक शिकायत निवारण पदाधिकारी राम दुलार राम ने धन्यवाद ज्ञापन कर मेहमानों के प्रति आभार जताया वहीं राज्य उद्घोषक डॉ. निरंजन कुमार ने भी खूब स्नेह बांटे। बिहार दिवस उल्लास और उमंग के वातावरण में संपन्न हो गया।

मछली व्यापारी से हुई लूट मामले में एक बदमाश धराया

एसबी संवाददाता/अंकित सिंह

भरगामा/अररिया। भरगामा। विगत 16 अक्टूबर 2024 को अहले सुबह नया भरगामा गांव में मछली व्यापारी से हुए लूटपाट मामले के अप्राथमिकी अभियुक्त को भरगामा पुलिस ने शनिवार की देर रात को गिरफ्तार कर लिया है। आवश्यक पूछताछ के बाद रविवार को उसे न्यायिक हिरासत में अररिया जेल भेज दिया गया। पुलिस के हत्थे चढ़ा अपराधी मो. सलमान पिता अब्बास नया भरगामा का रहने वाला है। बताया जा रहा है कि भरगामा थानाध्यक्ष राकेश कुमार के नेतृत्व में गुप्त सुचना के आधार पर पुलिस ने मो. सलमान को नाटकीय अंदाज में उसके गांव से हीं गिरफ्तार कर लिया गया।

मामले को लेकर थानाध्यक्ष राकेश कुमार ने बताया कि कदमाहा गांव स्थित वार्ड संख्या 15 निवासी राजेश मंडल पिता सत्यनारायण मंडल जो पेशे से मछली व्यवसाय का कार्य करता है। उन्होंने थाना में दिए आवेदन में बताया था कि बुधवार की सुबह 2:45 बजे ऑटो पर सवार होकर वे और छोटू मंडल एवं ललन मंडल मछली की खरीदगी के लिए अन्यंत्र जा रहे थे। इसी क्रम में नया भरगामा के राम टोला के आगे एक अपाची बाइक और एक स्प्लेंडर बाइक पर सवार चार अपराधियों ने हथियार के बल पर राजेश मंडल से 14 हजार, छोटू मंडल से 12 हजार, ललन मंडल से 18 हजार एवं तीन मोबाइल छीनकर फरार हो गया था। थानाध्यक्ष ने बताया कि लूटपाट के शिकार मछली व्यवसाय के लिखित आवेदन पर छानबीन के बाद इस घटना में संलिप्त अपराधी मो. सलमान को पुलिस ने नाटकिय तरीके से उसे गांव से हीं गिरफ्तार कर लिया है।

पीड़ित परिवार से मिलने पहुंचे शेफर्ड धामू पाल

■ पीड़ित परिवार ने डाक्टर पर लगाए लापरवाही का आरोप

एसबी संवाददाता/मनोज कुमार बिन्द

बारा प्रयागराज। बारा थाना के अंतर्गत लोहगरा ग्राम सभा में बीते कुछ दिन पहले शिवा कांत पाल प्रयागराज से घर वापस आते समय रास्ते में एक्सीडेंट होने की वजह से उनका हाथ फैक्चर हो गया जिनका इलाज करने के लिए कनक हॉस्पिटल में एडमिट कराया लेकिन डॉक्टरों की घोर लापरवाही की वजह से और गलत दवा देने की वजह से मृत्यु हो गई। 23 मार्च 2025 को शेफर्ड टाइगर फोर्स इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष शेफर्ड धामू पाल ने अपनी टीम के साथ पीड़ित परिवार के घर पहुंच कर शोक संवेदना प्रकट किया और तत्काल यमुनापार डीएसपी से फोन के माध्यम से कार्रवाई करने के लिए बात किया उन्होंने अस्वस्थ किया और कहा टीम गठित की गयी है जांच चल रही हैं जल्द आरोपियो के खिलाफ कार्रवाई की जायेगी।

इस दौरान शेफर्ड टाइगर फोर्स इंडिया के जिला महामंत्री डा० राकेश कुमार पाल, रवि पाल एडवोकेट, प्रदेश मीडिया प्रभारी दिवाकर पाल, पत्रकार ब्रम्ह सुख पाल, एडवोकेट हाईकोर्ट नीरज पाल, रमेश पाल, मुन्नी लाल पाल प्रधान आदि सैकड़ों की संख्या में लोग उपस्थित रहे।

कटोरिया को हराकर फरका ने सेमीफाइनल में बनाई जगह

■ फरका ने 1-0 से किया जीत दर्ज, फरका के सौरभ बने मैन ऑफ द मैच

एसबी संवाददाता

अकबरनगर। आजाद क्रीड़ा मैदान श्रीरामपुर के तत्वाधान में खेले जा रहे आजाद चैलेंज कप प्रतियोगिता के तीसरे संस्करण का तीसरा क्वार्टर फाइनल मैच रविवार को कटोरिया एवं फरका के बीच खेला गया। फरका की टीम ने 1-0 से जीत दर्ज कर टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में अपनी जगह बना लिया। तीसरा क्वार्टर फाइनल मैच फरका एवं कटोरिया के बीच खेला गया। दोनों ही टीमों ने शानदार खेल का प्रदर्शन किया। फरका की टीम ने पहले हाफ की समाप्ति के कुछ मिनट पहले कटोरिया के खिलाड़ियों से हुई मामूली चूक का फायदा उठाकर एक गोल कर खेल में अपनी बढ़त बना लिया। पहले हाफ की समाप्ति तक फरका की टीम 1-0 से बढ़त बनाए हुई थी। दूसरे हाफ का खेल शुरू होते ही कटोरिया की टीम लगातार फरका पर अटैक करती रही। लेकिन निर्धारित समय तक गोल करने में सफल नहीं हो पाई और क्वार्टर फाइनल मैच हारकर टूनामेंट से बाहर हो गई। मैच में बेहतर खेल का प्रदर्शन करने के लिए फरका टीम के सौरभ कुमार को मैन ऑफ द मैच से सम्मानित किया गया। मैच में रेफरी की भूमिका रंजीत कुमार एवं लाइनमैन की भूमिका अंबुज एवं सागर ने निभाया। आयोजक समिति ने बताया कि टूनामेंट का चौथा एवं आखिरी क्वार्टर फाइनल मैच सोमवार को फतेहपुर एवं किशनपुर के बीच खेला जाएगा।

जमुई में धूमधाम से मनाया गया बिहार दिवस

एसबी ब्यूरो प्रमुख/मृगांक शेखर सिंह

जमुई। जिला पदाधिकारी श्रीमती अभिलाषा शर्मा ने श्रीकृष्ण सिंह स्टेडियम के मैदान पर मुख्य अतिथि के रूप में अग्नि ज्योति प्रज्वलित कर बिहार दिवस समारोह का शुभारंभ किया। डीडीसी सुभाष चंद्र मंडल, सिविल सर्जन डॉ. अमृत किशोर, जिला लोक शिकायत निवारण पदाधिकारी राम दुलार राम, डीटीओ मो. इरफान, डीपीआरओ वीरेंद्र कुमार, डीडीएलआर मो.तारिक रजा, वरीय उप समाहर्ता अमु अमला, आईसीडीएस की डीपीओ रश्मि रंजन, जिला शिक्षा पदाधिकारी राजेश कुमार, उत्पाद अधीक्षक सुभाष कुमार, जिला अवर निबंधक विनीत कुमार, सामाजिक सुरक्षा कोषांग के निदेशक सूरज कुमार, डीपीएम पवन कुमार, कार्यपालक अभियंता ई. गौतम कुमार समेत अन्य पदाधिकारी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

डीएम अभिलाषा शर्मा ने इस अवसर पर कहा कि 22 मार्च 1912 को बंगाल प्रेसीडेंसी से अलग होकर बिहार राज्य का अभ्युदय हुआ। बिहार विश्व को प्रथम गणराज्य, अहिंसा, सद्भाव, करुणा और प्रेम का संदेश देने वाला ज्ञान और संघर्ष की पावन धरा है। कालक्रम में 01अप्रैल 1936 को बिहार को विभाजन का दंश झेलना पड़ा और इससे अलग होकर ओडिशा राज्य का जन्म हुआ। लेकिन इसके बावजूद बिहार ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। विकास की नई गाथा गढ़ते रहा। 15 नवंबर 2000 को बिहार का एकबार फिर बटवारा हुआ। इस बार इससे अलग होकर झारखंड राज्य अस्तित्व में आया। इस विभाजन के ढाई दशक के दरम्यान यह प्रदेश उन्नत बिहार विकसित बिहार कहलाने का गौरव हासिल किया है। अभिलाषा शर्मा ने बिहार के विकास की विस्तार से चर्चा करते हुए इसे विकसित प्रदेश बनाने के लिए लोगों से सहयोग की अपील की। उन्होंने नागरिकों को "उन्नत बिहार, विकसित बिहार "के संदेश के साथ बिहार के अवतार दिवस की अशेष शुभकामना दी।

डीडीसी सुभाष चंद्र मंडल ने कहा कि देश दुनिया में प्रथम लोकतंत्र के लिए बिहार जाना जाता है। वैशाली जिला के लिच्छवी में इसकी शुरूआत होने की बात बताते हुए कहा कि गौतम बुद्ध और सम्राट अशोक भी बिहार की खास पहचान हैं। समारोह के दूसरे सत्र में स्थानीय कलाकारों और स्कूली बच्चों ने रोचक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया और उपस्थित जनों को टस से मस नहीं होने दिया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम का आरंभ स्वागत गान से हुआ जिसे ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल की बेटियों ने प्रस्तुत किया। ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल के निदेशक डॉ. मनोज सिन्हा भी इस मौके पर उपस्थित रहे। इसके बाद गीत और संगीत की रसधारा बहने लगी। इसी कड़ी में मणिद्वीप एकेडमी की बेटियों ने जहां झिझिया नृत्य से लोगों का मन मोहा वहीं स्वामी विवेकानंद नर्सिंग स्कूल की छात्राओं ने ऐसन आपन बा बिहार गीत और नृत्य प्रस्तुत कर श्रोताओं का दिल जीत लिया। बीएड महाविद्यालय सिमुलतला के कलाकारों ने मटका संथाली नृत्य का उत्कृष्ट प्रदर्शन कर खूब तालियां बटोरी वहीं कॉलेज ऑफ फार्मेसी के छात्र -छात्राओं ने मिश्रित बिहार लोक गीत गाकर ऐसा शमां बांधा कि लोग दांतों तले उंगलियां दबा ली। उत्क्रमित मध्य विद्यालय कल्याणपुर के कलाकारों की लोक गीत प्रस्तुति ने श्रोताओं पर मनोरंजन का जादू चलाकर उन्हें वाह-वाह करने के लिए मजबूर कर दिया तो उत्क्रमित मध्य विद्यालय धरमपुर की बेटियों ने स्वच्छता गीत और नृत्य के जरिए जनसमूह को स्वभाव स्वच्छता संस्कार स्वच्छता का संदेश दिया। स्वामी विवेकानंद एजुकेशन ट्रस्ट के कलाकारों ने अनोखे तरीके से लोक नृत्य प्रस्तुत कर लोगों को अचंभित कर दिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम को उपस्थित जन समूह ने खूब सराहा। इस अवसर पर कला जत्था ने शराबबंदी और मतदाता जागरूकता अभियान गीत के साथ लघु नाटिका प्रस्तुत कर उपस्थित जनों के दिलों पर अमिट छाप छोड़ी। कलाकारों ने लोगों को मतदान करने के साथ नशा से बचने का संदेश दिया।

जिलाधिकारी ने समारोह के अंत में कार्यक्रम स्थल पर विकास को परिभाषित करने वाले विभिन्न स्टॉलों का अवलोकन किया और लोगों को इससे परिचित कराया। अभिलाषा शर्मा ने स्वास्थ्य विभाग, आईसीडीएस, मद्य निषेध एवं उत्पाद, जल संसाधन विभाग आदि के स्टालों पर गईं और स्वयं सभी योजनाओं से रूबरू हुईं। उत्पाद अधीक्षक सुभाष कुमार, सिंचाई प्रमंडल के कार्यपालक अभियंता ई. गौतम कुमार ने जिलाधिकारी को वांछित जानकारी दी। कार्यक्रम के दरम्यान उत्क्रमित मध्य विद्यालय की बाल कलाकार को डीएम ने पुष्प गुच्छ देकर उसकी कला को सलाम किया।

बिहार दिवस आयोजन समिति के सदस्य डॉ. निरंजन कुमार ने प्रशंसनीय एवं सराहनीय रूप से समस्त कार्यक्रम का मंच संचालन किया। बिहार के अवतार दिवस पर आयोजित समारोह में जन समुद्र ने हिस्सा लिया और संपूर्ण कार्यक्रम का जमकर आनंद उठाया। इसके साथ-साथ "राजस्व रैंकिंग" में सुधार एवं उत्कृष्ट कार्य करने वाले अंचल अधिकारियों को प्रशस्ति पत्र देकर जिला पदाधिकारी द्वारा सम्मानित भी किया गया। समारोह उल्लास और उमंग के वातावरण में संपन्न हो गया।

महामाई माता बालासुंदरी के दर्शनों करवाने के लिए सात बसों की यात्रा हुई रवाना

एसबी ब्यूरो प्रमुख/विजेश कुमार

पंचकूला। महामाई माता बालासुंदरी सेवा ट्रस्ट द्वारा महामाई माता बालासुंदरी के दर्शनों करवाने के लिए आज पहली बार सात बसों की यात्रा रवाना हुई। ट्रस्ट द्वारा सभी श्रद्धालुओं के लिए सुबह नाश्ते एवं दोपहर को भोजन प्रसाद की व्यवस्था की गई थी।

ट्रस्ट के चेयरमैन अमित जिंदल, प्रधान संजय सिंगला, महासचिव संदीप गुप्ता ने विशेष जानकारी मे बताया कि सात बसों के काफिले में माता के दर्शनों के लिए भक्तों की विशेष बस यात्रा पंचकूला से रवाना हुई। इस यात्रा को श्री श्री 108 महंत संपूर्णानंद ब्रह्मचारी महाराज, वरिष्ठ भाजपा नेत्री बंतो कटारिया, जिला भाजपा अध्यक्ष अजय मित्तल ने कन्या पूजन उपरांत श्री श्री 108 महंत स्वरूपानंद ब्रह्मचारी महाराज, मुख्य पुजारी माता मनसा देवी भगवती प्रसाद, बंतो कटारिया, अजय मित्तल ने नारियल फोड़कर झंडे फहराकर सेक्टर 16 स्थित अग्रवाल भवन से रवाना किया गया। उन्होंने बताया कि भविष्य मे भी ट्रस्ट दौरा ऐसी निःशुल्क यात्राऐं एवं सामाजिक कार्य निरंतर होते रहेंगे। जब बस यात्रा की रवानगी हो रही थी तो वातावरण पूरी तरह से भक्तिमय हो गया था। माता बालासुंदरी के गगनभेदी जयकारों के बीच भक्तजन नाचते गाते, कीर्तन करते हुए रवाना हुए। बस यात्रा में माता के भक्तों का में गजब का उत्साह नजर आ रहा था। क्षेत्र के सुप्रसिद्ध भजन गायक विजय गर्ग ने पूरी यात्रा के दौरान माता रानी के सुंदर सुंदर भजनों से वातावरण माता की भक्तिमय कर दिया।

इस अवसर पर श्रीश्री 108 महंत संपूर्णानंद ब्रह्मचारी महाराज, पुजारी माता मनसा देवी, बंतो कटारिया, अजय मित्तल, ट्रस्ट के चेयरमैन अमित जिंदल, प्रधान संजय सिंगला, महासचिव संदीप गुप्ता, कोषाध्यक्ष संदीप गर्ग, दिनेश जिंदल, विजय बंसल, अशोक जिंदल, सुशील गुप्ता, रमन सिंगला, दिनेश गुप्ता, विनोद जिंदल, जितेन्द्र जिंदल, अतुल गर्ग, राजेश जिंदल, विपुल मित्तल विशेषतौर मौजूद रहे।

खानपुर पुलिस ने फरार चल रहे दो वारंटी अभियुक्त को गिरफ्तार कर भेजा जेल

संजना भारती संवाददाता

अर्जुन कुमार झा

समस्तीपुर। खानपुर पुलिस ने बीती रात पुलिस फोर्स के साथ गुप्त सूचना के आधार पर थाना क्षेत्र के खैरी गाँव में छापामारी कर समस्तीपुर न्यायालय से निर्गत कुर्की वारंट EX एक्ट 08/2018/TR-122/2025-में फरार चल रहे अभियुक्त (1) अर्जुन चौधरी पिता-स्वर्गीय उमेश चौधरी-ग्राम-खैरी थाना खानपुर जिला समस्तीपुर को छापामारी के क्रम में घर से ही गिरफ्तार कर थाना लाया गया।

वही दूसरी तरफ थाना कांड-73/2025-धारा-30(a) बिहार मद्य निषेद्य एवं उत्पाद अधिनियम तहत गिरफ्तार अभियुक्त (2) अभिमन्यु कुमार पिता अर्जुन राम ग्राम-मिजार्पुर थाना रोसड़ा जिला समस्तीपुर को त्रिमुहानी से गिरफ्तार कर थाना लाये।

बताते चले कि गिरफ्तार दोनों अभियुक्त के बारे में पूछने पर थानाध्यक्ष ने बताया कि गिरफ्तार एक अभियुक्त अर्जुन चौधरी ग्राम खैरी के विरूद्ध समस्तीपुर न्यायालय से निर्गत एक्साइज एक्ट में कुर्की वारंट में फरार चल रहा था। जिसे बीती रात घर से ही गिरफ्तार कर थाना लाया गया। तथा दूसरा गिरफ्तार अभियुक्त अभिमन्नु कुमार ग्राम-मिर्जापुर को खानपुर थाना कांड संख्या-73/2025 में शराब कारोबार करने में गिरफ्तारी हुआ है। दोनों अभियुक्त को गिरफ्तारी कागजात तैयार कर थाना के पुलिस पदाधिकारी व चौकीदार के साथ उचित अभिरक्षा में सरकारी वाहन से माननीय न्यायालय समस्तीपुर में उपस्थापन हेतु भेजा गया है।

पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान को मिला नया प्रधान सचिव

एसबी संवाददाता

पंजाब। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान को नया प्रधान सचिव मिल गया है। पंजाब सरकार ने 2006 बैच के आईएएस अधिकारी रवि भगत को पंजाब के मुख्यमंत्री का प्रिंसिपल सेक्रेटरी नियुक्त किया है। अभी तक रवि भगत सीएम भगवंत मान के स्पेशल प्रिंसिपल सेक्रेटरी के रूप में काम कर रहे थे।

रवि भगत से पहले एडीजीपी गौरव यादव सीएम मान के स्पेशल प्रिंसिपल सेक्रेटरी थे। गौरव यादव 1992 बैच के आईपीएस अधिकारी हैं। उन्होंने सीएम मान के पदभार संभालने के तुरंत बाद यह जिम्मेदारी ली थी। रवि भगत की पदोन्नति राज्य के प्रशासनिक फेरबदल के तहत हुई है। रवि भगत की शैक्षणिक योग्यता भी काफी प्रभावशाली है। उन्होंने जियो पॉलिटिक्स में एम फिल किया है और इसके अलावा रिजनल डेवलपमेंट में एमए, पब्लिक पॉलिसी में एमए और पब्लिक पॉलिसी एंड मैनेजमेंट में एमएससी की डिग्री हासिल की है। रवि भगत की पढ़ाई पंजाब के जालंधर यूनिवर्सिटी से हुई है। मुख्यमंत्री भगवंत मान के कार्यकाल के दौरान अब तक तीन प्रधान सचिव बदले जा चुके हैं। 2022 में मुख्यमंत्री बनने के बाद, यह पद कई बार बदला गया है। लेकिन, इस समय रवि भगत के बाद स्पेशल प्रिंसिपल सेक्रेटरी के तौर पर किसे नियुक्त किया गया है, इसकी जानकारी अभी तक सामने नहीं आई है।

फिरोजपुर छावनी से हुसैनीवाला के लिए विशेष ट्रेन शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए हुई रवाना

एसबी संवाददाता

फिरोजपुर। फिरोजपुर छावनी से हुसैनीवाला के लिए विशेष ट्रेन शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए रवाना हुई, तो 10 इस किलोमीटर के इस सफर में लोगों की भावनाओं का ज्वार आसमान पर था। हो भी क्यों न... यह वही पवित्र स्थल है, जहां शहीद-ए-आजम भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव हमेशा के लिए भारत मां की गोद में समा गए थे।

फिरोजपुर के हुसैनी वाला बॉर्डर पर लगे शहीदी मेले के दौरान रेल प्रशासन ने 23 मार्च को स्पेशल ट्रेन चलाई है। रविवार को इस ट्रेन पर सैकड़ों लोगों ने सफर किया। ट्रेन का किराया प्रति व्यक्ति 10 रुपये रखा गया है। सभी लोग फिरोजपुर छावनी रेलवे स्टेशन से ट्रेन के माध्यम से हुसैनी वाला बॉर्डर पर पहुंचे। फिरोजपुर छावनी रेलवे स्टेशन से पहली ट्रेन सुबह 9:00 बजे हुसैनीवाला वाला बॉर्डर के लिए रवाना हुई। उक्त ट्रेन सुबह 9:00 बजे से लेकर शाम के 6:00 बजे तक इसी तरह लोगों को लेकर जाएगी और लेकर आएगी। हुसैनी वाला रेलवे स्टेशन पर यह ट्रेन पहुंचकर वहीं रुक जाती है। यहां पर यात्री उतरकर शहीदी स्मारक पर पैदल जाते हैं। शहीदी स्मारक पर मेला लगा हुआ है। यहीं पर शहीद भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव की समाधि बनी है। बाकी दिन ये ट्रेन नहीं चलती है। ये रेल पटरी कभी पाकिस्तान तक बिछी हुई थी और इसी ट्रैक से ट्रेन पाकिस्तान जाती और आती थी। अब दोनों देशों में तनाव के चलते अब यहां से ट्रेन पाकिस्तान नहीं जाती है।

23 मार्च, 1931 को लाहौर की सेंट्रल जेल में फांसी दिए जाने के बाद तीनों शहीदों का यहीं पर अंतिम संस्कार किया गया था। इन अमर शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए हर वर्ष 23 मार्च को हुसैनीवाला में शहीदों के स्मारक पर मेला लगता है। इस समाधि स्थल से भारत से पाकिस्तान की ओर एक रेलवे ट्रैक गुजरता था। 1971 के युद्ध के दौरान पाकिस्तानी सेना इस ट्रैक का आधा हिस्सा उखाड़ कर ले गई थी, लेकिन आधा हिस्सा अब भी हुसैनीवाला बॉर्डर तक मौजूद है, जिसे रेलवे ने संरक्षित किया है। इस ट्रैक पर साल में सिर्फ दो बार ही ट्रेन चलाई जाती है। एक बार 23 मार्च को शहीदी मेले और दूसरी बार 13 अप्रैल बैसाखी मेले पर।

रेलवे प्रशासन फिरोजपुर छावनी से हुसैनीवाला के लिए यह विशेष ट्रेन चलाता है, ताकि लोग शहीदों को श्रद्धांजलि दे सकें। यदेश के अलग-अगल हिस्सों से यहां हजारों की संख्या में लोग पहुंचते हैं। इस 10 किलोमीटर के सफर में लोग देश सेवा के जज्बे से भर जाते हैं।

धार्मिक कार्यक्रमों से बढ़ता है आपसी भाईचारा व प्रेमः एडवोकेट सोनिया बोहत

समिति के सदस्यों ने समाजसेविका एडवोकेट सोनिया बोहत को किया सम्मानित

एसबी ब्यूरो प्रमुख/विजय गर्ग

असन्ध। श्री महाकाली मंदिर सेवा समिति असंध द्वारा 18वां विशाल भंडारा व मां भगवती चौंकी का आयोजन किया गया। जिसमें श्रद्धालुओं ने बढ़ चढ़कर भंडारे का प्रसाद ग्रहण किया। भजन गायक साहिल डोगरा एंड पार्टी ने अपनी मनमोहक प्रस्तुति देकर भक्तों को झूमने पर मजबूर कर दिया और माता रानी की महिमा का गुणगान किया। सभी ने मां के जयकारे लगाए। कार्यक्रम में पहुंची समाजसेविका व कांग्रेस नेत्री एडवोकेट सोनिया बोहत व समाजसेवी हरीश मदान को श्री महाकाली मंदिर सेवा समिति के प्रधान धर्मपाल कोचर, हरीश तगेजा व राकेश बवेजा ने सम्मानित किया। एडवोकेट सोनिया बोहत ने कहा कि धार्मिक कार्यक्रमों से आपसी भाईचारा व प्रेम बढ़ता है। हमें धार्मिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए। धार्मिक कार्यक्रमों में भाग लेने से भाईचारे के साथ-साथ प्रेम की भावना भी बढ़ती है। समिति के प्रधान धर्मपाल कोचर ने कहा कि धार्मिक कार्यक्रमों से मन को जहां शांति मिलती है वहीं सच्चे मार्ग पर चलने की प्रेरणा भी मिलती है। इस दौरान माता की चौंकी के बाद प्रसाद वितरित किया गया।

इस अवसर पर मनोज ग्रोवर,राजेश सिंधवानी, गोपाल मल्होत्रा, प्रवीण ग्रोवर, अमित नरूला, पवन लूथरा, नीटू ग्रोवर, केवल मदान, विकास कुकरेजा, अजय जुनेजा, अंकुर मदान, तरुण बवेजा, विशाल कामरा सहित अन्य मौजूद रहे।

आम जन की समस्याओं का तय समय सीमा में हो रहा है समाधानः जगमोहन

विधायक ने जाने सुझाव व सुनी समस्याएं

एसबी विशेष संवाददाता/मदन पुरी

करनाल। विधायक जगमोहन आनंद ने कहा कि आमजन की समस्याओं का तय सीमा में निवारण ही सरकार की जनता के बीच विश्वसनीयता को बढ़ाता है। वर्तमान सरकार जनता की कसौटी पर खरा उतरने के लिए निरंतर प्रयासरत है। पिछले 10 वर्षों में भी हरियाणा सरकार ने जनता की समस्याओं पर गंभीरता से काम किया है। यही कारण है कि जनता ने सरकार को तीसरी बार भी काम करने का मौका दिया है।

विधायक जगमोहन आनंद रविवार को नेहरू पैलेस में चाय पर चर्चा के दौरान बड़ी संख्या में मिलने आए आमजन से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने जनता से भी सुझाव लिए और उन सुझावों पर सामूहिक विचार विमर्श भी किया, साथ ही शहर की बेहतरी के लिए सभी को सुझाव देने के लिए भी कहा। चाय पर चर्चा कार्यक्रम किसी व्यक्ति का नहीं बल्कि पूरे शहरवासियों का प्लेटफॉर्म है। कोई भी व्यक्ति यहां आकर अपने सुझाव दे सकता है। यदि सुझाव बेहतर होगा तो अवश्य उस पर कार्य किया जाएगा।

विधायक ने आमजन की समस्याएं भी सुनी और मौके पर ही उनका समाधान भी किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि करनाल की जनता ने उन्हें भारी बहुमत से जीत दिलाकर हरियाणा विधानसभा तक पहुंचाया है। मैं जनता का सेवक हूं और उनका प्रतिनिधि बनकर उनके हकों की आवाज हरियाणा विधानसभा में उठाता रहूंगा। उन्होंने कहा कि विधानसभा सत्र में करनाल की समस्याओं से अवगत करवाया है, उन्हें उम्मीद है कि जल्द ही इन समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी का आज भी करनाल की जनता से विशेष लगाव है। केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल भी अपने दौरे के साथ निरंतर करनाल शहर को कोई न कोई योजना की सौगात देकर जाते हैं। शहर में तेज गति से विकास कार्य करवाए जा रहे है। इस मौके पर भारी संख्या में गणमान्य व्यक्ति व शहरवासी उपस्थित थे।

नशा तस्करों की जगह सलाखों पीछेः एसपी राजेश कालिया

जांच व पूछताछ करते पुलिसकर्मी। (छायाः एसबी)

एसबी ब्यूरो प्रमुख/निर्मल कुमार

कैथल। नशा तस्करो की धरपकड़ व अन्य अपराधीक गतिविधियों पर अंकुश लगाने तथा अपराधियों पर शिकंजा कसने के लिए एसपी राजेश कालिया के निदेर्सानुसार डीएसपी कुलदीप बेनीवाल के नेतृत्व में कैथल पुलिस लगातार प्रयासरत है। रविवार की सुबह एसएचओ थाना सीवन एसआई कुलदीप देशवाल, एसएचओ थाना गुहला एसआई रामपाल, एसएचओ ढांड इंस्पेक्टर राजेंद्र, एसएचओ तितरम एसआई कृष्ण व थाना शहर एसएचओ इंस्पेक्टर गीता की पुलिस टीमों द्वारा थाना ढांड, सीवन, गुहला, तितरम व थाना शहर क्षेत्र में सर्च आपरेशन चलाया गया। जिसके तहत नशा तस्करो का पुराना रिकॉर्ड व गुप्त सुचना के आधार पर संदिग्ध घरो की जांच सहित अन्य जगह की छानबीन की गई कि कहीं किसी जगह कोई मादक पदार्थ छीपा रखा हो या कोई नशा बेचने वाला या अपराधीक कार्य करने वाला गैर कानूनी तरीके से न रहता हो।

एसपी राजेश कालिया ने बताया कि कैथल पुलिस लगातार नशा तस्करो का पुराना रिकॉर्ड खंगालकर व गुप्त सुचना के आधार पर निरंतर यह कार्रवाई कर रही है। इस अभियान में मुख्य रूप से नशे का कारोबार करने वालों और आपराधिक कार्यों में शामिल आरोपी जो गैर कानूनी तरीके से रह रहे हों पर शिकंजा कसना है, जिला पुलिस का उद्देश्य कैथल जिला को नशा मुक्त बनाना है। नशा तस्करों की जगह सलाखों पीछे है। पुलिस का यह अभियान भविष्य में भी निरंतर जारी रहेगा तथा संदिग्ध नशा तस्करों की निरंतर मुहिम दौरान नियमानुसार कार्रवाई अतंर्गत तलाशी ली जाएगी।

माता शाकुंभरी देवी प्राचीन तीर्थ स्थल पर श्रीमद्भागवत कथा का आरम्भः महंत आजाद गिरी

एसबी ब्यूरो प्रमुख/विजय गर्ग

असंध। जलमाना कस्बा के गांव अलावला में 22 मार्च से आयोजित सप्त दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा पाठ का आरम्भ हुआ। शुभारंभ शनिवार मंगल कलशयात्रा एवं विशाल शोभायात्रा के साथ धूमधाम से किया गया। इसी बीच 25 मार्च से क्षेत्रपाल की पूजा अर्चना के बाद इस कार्यक्रम का समापन 29 मार्च को होगा।

मंदिर के महंत ब्रह्मचारी आजाद गिरी जी महाराज ने बताया कि आयोजित सप्त दिवसीय श्रीमद्भगवत गीता पाठ का समापन मंदिर परिसर में कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड की 48 कोसीय परिधि में शुमार माता शाकुंभरी देवी प्राचीन तीर्थ के भव्य निर्माण और सौंदर्य करण का उद्घाटन कर होगा। उन्होंने बताया कि इस अवसर पर श्रीमद्भागवत गीता की छत्रछाया में 29 मार्च को सरोवर समिति के मार्गदर्शन और समस्त ग्रामीणों के सहयोग से क्षेत्रपाल और सरोवर उद्घाटन के अवसर पर भंडारे का आयोजन करवाया जा रहा है। जिसमें समस्त ग्रामवासियों के सहयोग से किए गए सप्त दिवसिय श्रीमद्भागवत कथा के पाठ का आरम्भ एक पवित्र और आध्यात्मिक अनुभव है। यह कथा भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं और उपदेशों का वर्णन करती है, जो भक्तों को आध्यात्मिक ज्ञान और शांति प्रदान करती है। गीता का सार सुनने से पापों का नाश होता है और भक्तों को पुण्य की प्राप्ति होती है। कथा के पाठ से आत्म-शुद्धि होती है और भक्तों को अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने में मदद मिलती है। इस कार्यक्रम में कथा वाचक परम श्रद्धेय त्रिभवन त्रिपाठी, परमश्रद्धेय आचार्य राधे कृष्ण शास्त्री और पंडित सतनारायण शास्त्री ने सत्संग मण्डली के साथ श्रदालुओं को मंत्र मुग्ध कर रहे है और नशा सहित अन्य विकारों से दूर रहने का संदेश दे रहे है। सरपंच अजीत सिंह राणा,समिति प्रधान कबूल सिंह राणा,पूर्व सरपंच ओमपाल सिंह राणा, अक्षय वर्मा, नंबरदार कुलदीप राणा सहित अन्य सेवादारों ने बताया कि इस अवसर पर दूर दराज से संत महंत पहुंच कर आशीर्वाद देंगे।

कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि असंध विधायक योगेंद्र सिंह राणा उपस्थिति रहेंगे एवं क्षेत्र के अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों को भी कार्यक्रम का निमंत्रण दिया गया है।

बेटियों के जन्म पर जिले के 12 गांवों में किया गया कुआं पूजन

बेटियों के नाम पर महिलाओं ने गाए गीत

एसबी ब्यूरो प्रमुख/निर्मल कुमार

कैथल। बीते शुक्रवार को महिला एवं बाल विकास विभाग के द्वारा बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान के तहत जिले के बालू, कांगथली, सीवन, गुहणा, रसूलपुर, कुतुबपुर, हाबड़ी, रसीना, बाकल, खेड़ी, कुराड़, दीवाल आदि गांवों में बेटियों के जन्म पर कुआं पूजन किया गया। महिला एवं बाल विकास विभाग में कार्यरत सुपरवाईजरों द्वारा इन कार्यक्रमों को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई।

जिला कार्यक्रम अधिकारी गुरजीत कौर ने बताया कि बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान के तहत जिले में हर सप्ताह गावों में सेल्फी विद डॉटर अभियान, कुआं पूजन एवं पौधारोपण अभियान शुरू किया गया है। जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों को बेटियों के बारे में जागरूक करना है, जिस पर आज जिन गावों में बेटियों ने जन्म लिया है, उनके घर जाकर बेटियों के नाम पर कुआं पूजन कार्यक्रम आयोजित किया गया। बेटियों के नाम पर गीत भी गाए गए। बच्ची की मां के सिर पर कलश रखकर कुएं पर पहुंच कर पूजन किया गया। जिसमें गांव की महिलाओं के द्वारा भी भाग लिया गया। उन्होंने कहा कि बेटियों के नाम आते ही चेहरे पर खुशी दौड़ जाती है। बेटियां घर की शोभा होती है। जिस घर में बेटी का सम्मान किया जाता है, उस घर में भगवान का निवास होता है। बेटियां दो परिवारों को जोड़ती है। इस अवसर पर महिलाओं को पुरस्कार भी दिए गए। ब्लॉक सुपरवाईजर सविता, कुसुम, शिल्पा, निशा, सपना, बीरमति, सुमन, अंजलि, कविता, पूजा, अनिता आदि के द्वारा गावों में कार्यक्रम को आयोजित करवाने में अहम भूमिका निभाई गई। इस अवसर पर सभी सुपरवाइजर, आंगनवाड़ी वर्कर, हेल्पर आदि मौके पर उपस्थित रही।

राजौंद फुल्ला सिंह मार्केट में दुकानदार संगठन की मीटिंग हुई संपन्न

मीटिंग की संयुक्त अध्यक्षता प्रधान भीम सिंह राणा व सतपाल शर्मा ने की

संजना भारती संवाददाता

राजौंद। राजौंद की फुल्ला सिंह मार्केट में नगर के मुख्य बाजार संगठन की मीटिंग संपन्न हुई। मीटिंग में नगर के लगभग 65 से 70 दुकानदारों ने भाग लिया। रविवार होने के कारण कुछ दुकान आज नहीं खुली थी। मुख्य बाजार, कैथल मार्ग के अनुमान सभी दुकानदारों ने प्रधान भीम सिंह राणा के नेतृत्व में मजबूत संगठन बनाने की इच्छा प्रकट की है। रविवार को आयोजित सभा में प्रधान भीम सिंह राणा, उप-प्रधान निर्मल कुमार, कार्यकारिणी सदस्य सतपाल शर्मा व राहुल छाबड़ा, दुकानदार किरणपाल, सतपाल मित्तल, पवन कुमार ने अपने विचार रखें।

वक्ताओं ने अपने सम्बोधन में कहा कि राजौंद बाजार में एक मजबूत संगठन की आवश्यकता थी। जिसे सभी दुकानदारों ने मिलकर आज पूरा किया है। प्रधान भीम सिंह राणा ने कहा कि सभी दुकानदार मिलकर काम करेंगे। बाजार के दुकानदारों की जो भी जरूरतें, समस्या होगी सरकार व प्रशासन से अनुरोध कर सहयोग मांगा जाएगा।

उप-प्रधान निर्मल कुमार शर्मा ने संगठन की आवश्यकता व महत्व पर अपने विचार रखें। उन्होंने कहा कि बहुत जल्द संगठन का रजिस्ट्रेशन करवाया जाएगा। सतपाल शर्मा, पवन कुमार मित्तल, सुरेश मित्तल, किरण पाल, राहुल छाबड़ा, अमन शर्मा सहित अन्य ने कहा कि सभी दुकानदारों की लंबे समय से इच्छा थी कि नगर में दुकानदारों का एक संगठन बनाया जाए जो दुकानदारों की समस्याएं, सरकार व प्रशासन के सामने रखें और उनका समाधान करवाया जाए। इस अवसर पर बताया गया कि नगर के दुकानदारों, कार्यकारिणी व प्रधान की ओर से एक पत्र नगर पालिका सचिव को कुछ रोज पहले दिया गया था। जिसमें में दुकानदारों की कुछ मांगे रखी गई थी। उसके समाधान बारे सोमवार, 24 मार्च को नपा सचिव से मिलने का समय लिया गया है। उप प्रधान निर्मल कुमार शर्मा ने बताया कि नपा सचिव को पत्र लिखकर राजौंद के असंध- कैथल मार्ग पर उड़ती हुई धूल से निजात दिलवाने के लिए पानी का छिड़काव करने का अनुरोध किया गया है। नगर के मेन बाजार, मुख्य सड़कों पर सीसीटीवी कैमरे लगाने की प्रार्थना की गई है। गर्मी के मौसम को देखते हुए नगर में वाटर कूलर लगवाने का अनुरोध किया गया है। नगर के जिन खम्बो पर लाइट नहीं लगी हुई है या लाइट खराब है वहां पर लाइट लगाने का अनुरोध किया गया है।

नगर में प्रतिदिन अच्छे ढंग से सफाई करवाने व तुरंत कूड़े कचरे की लोडिंग करवाने का अनुरोध किया गया है। नगर में सफाई कर्मचारियों की संख्या में इजाफा करने की प्रार्थना की गई है। नगर पालिका सचिव ने उक्त की गई प्रार्थना का शीघ्र समाधान करने का आश्वासन दिया गया था इसके बारे में मुख्य बाजार संगठन सोमवार को नपा सचिव नरेंद्र शर्मा से मिलकर समस्या का निवारण शीघ्र करने का अनुरोध करेगा। सभी दुकानदारों ने नगर में बनाए गए संगठन पर खुशी व संतुष्टि जाहिर की है।

जालंधर में थाना प्रभारी और कांस्टेबल सस्पेंड

एसबी संवाददाता

जालंधर। पंजाब के जालंधर में बीते दिनों युवक की मौत मामले में पुलिस वालों पर गाज गिरी है। मामले में पुलिस कमिश्नर जालंधर धनप्रीत कौर ने रविवार को बड़ा एक्शन लेते हुए थाना कैंट के प्रभारी इंस्पेक्टर हरिंदर सिंह और कांस्टेबल जसपाल सिंह को सस्पेंड कर दिया है। जानकारी अनुसार जालंधर कैंट में एक युवक ने अपनी जीवन लीला खत्म कर ली थी। मामले में उक्त अधिकारियों पर पहले अवैध रूप से युवक को कस्टडी में लेने, फिर रिश्वत वसूलने और रिश्वत के पैसे लौटान की बात सामने आई थी। इस मामले में थाना प्रभारी और मृतक युवक की बहन साथ बातचीत की वीडियो भी सामने आई थी। वहीं दूसरी ओर परिवारिक सदस्यों ने कहा कि पुलिस वालों पर यह कार्रवाई सिर्फ दिलासा है। मृतक को इंसाफ के लिए उक्त आरोपी पुलिस कर्मियों पर एफआईआर दर्ज की जानी चाहिए या फिर इन्हें जांच के बाद नौकरी से बर्खास्त किया जाना चाहिए। वहीं थाना प्रभारी को निलंबित किए जाने के बाद प्रभारी का चार्ज ड्यूटी अफसर एएसआई को सौंपा गया है ताकि काम होते रहें। नए थाना प्रभारी की नियुक्ति तक चार्ज एएसआई के पास रहेगा।

सुभाष साध को सर्व सम्मति से दूसरी बार चुना गया गुरुकुल प्रबंधक कमेटी का प्रधान

बैठक में मौजूद नवनियुक्त कार्यकारिणी के पदाधिकारी। (छायाः एसबी)

संजना भारती संवाददाता

असन्ध। आर्य कन्या गुरुकुल पाढा में रविवार को प्रबंधन कमेटी का चुनाव कराया गया। प्रबंधक कमेटी का चुनाव प्रिंसिपल अजमेर सिंह पान्नू की देखरेख में हुआ। महासभा के सदस्यों ने सर्व सम्मति से सुभाष साध को निर्विरोध प्रधान चुन लिया। गुरुकुल के संरक्षक धर्मवीर पाढा ने बताया कि गुरुकुल के प्रति निष्ठा और ईमानदारी को देखते हुए सुभाष साध को प्रधान पद की जिम्मेदारी दूसरी बार सौंप दी गई है। गुरुकुल प्रबंधन का कार्यकाल 3 वर्ष का रहेगा। उन्होंने बताया कि आर्य कन्या गुरुकुल पाढा के इतिहास मे अब तक सर्व सम्मति से प्रबंधन कमेटी को चुना गया है।

नवनियुक्त प्रबंधन कमेटी में सुभाष साध को प्रधान, उप प्रधान जसवीर सिंह ऐंचला, वरिष्ठ उप प्रधान महेंद्र सिंह भाम्बरेहडी, कोषाध्यक्ष सतबीर ढुल, प्रबंधन वेद सिंह ढुल, सह प्रबंधक जोगिंदर, सचिव दलबीर सिंह नंबरदार, संरक्षक धर्मवीर आर्य, जागेराम शर्मा, राजेश आर्य को जिम्मेदारी दी।

इस दौरान दीपक, नसीब सिंह, देशराज, डॉक्टर महा सिंह, जय भगवान अत्री, कलीराम, दया सिंह, हरेंद्र संधू, जोगिंदर आर्य, वीरेंद्र आर्य, कैप्टन दलवीर, प्रमील कुमार, वेद प्रकाश साध, अनुज कुमार सहित अनेक सदस्य मौजूद रहे।

पीएम जीवन ज्योति बीमा योजना तथा पीएम सुरक्षा बीमा योजना नागरिकों के लिए हो रही है कारगर साबितः डीसी प्रीति

एसबी ब्यूरो प्रमुख/निर्मल कुमार

कैथल। डीसी प्रीति ने कहा कि प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना तथा प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना नागरिकों के लिए कारगर सिद्ध हो रही है। इन योजनाओं के फार्म प्रत्येक बैंक व डाकघर में उपलब्ध हैं। इन योजनाओं में निर्धारित वार्षिक प्रीमियम जमा करवा कर दो लाख रुपए तक का बीमा होता है।

डीसी कैथल प्रीति।

डीसी प्रीति ने कहा कि केंद्र सरकार ने प्रत्येक बैंक उपभोक्ता को जीवन सुरक्षा बीमा योजना का लाभ देने के लिए स्कीम चलाई हुई हैं। सामाजिक सुरक्षा योजना सामान्य परिवार को मुश्किल की घड़ी में आर्थिक समर्थन देकर मजबूत बनाती है। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना में 18 से 50 वर्ष आयु के व्यक्ति नामांकन करवा सकते है। योजना के तहत 436 रुपये वार्षिक प्रीमियम जमा करवाना होता है तथा इससे 2 लाख रुपए के जीवन बीमा का संरक्षण मिलता है। इसी प्रकार प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना एक दुर्घटना बीमा योजना है। इस योजना के तहत 18 से 70 वर्ष तक के नागरिक अपना दुर्घटना बीमा करवा सकते है। केवल 20 रुपए के वार्षिक प्रीमियम पर इस योजना में 2 लाख रुपए का दुर्घटना बीमा संरक्षण प्राप्त होता है। उन्होंने बताया कि इन बीमा योजनाओं का प्रीमियम उपभोक्ता के बैंक या डाकघर खाते में से ऑटो डेबिट होता है तथा दावे की राशि संबंधित के बैंक खाते में सीधे जमा हो जाती है। इन योजनाओं में नामांकन करवाने के लिए अपने नजदीकी बैंक शाखा अथवा डाकघर से संपर्क करें। उन्होंने नागरिकों से आह्वान किया है कि वे अधिक से अधिक सरकार की योजनाओं का लाभ उठाए।